C O N T E N T S

Sixteenth Series, Vol. XXVI, Twelfth Session, 2017/1939 (Saka)
No. 17, Wednesday, August 9, 2017/Shravana 18, 1939 (Saka)

SUBJECT	PAGES
WELCOME TO PARLIAMENTARY DELEGATION FROM SEYCHELLES	6
REFERENCE BY THE SPEAKER	
Homage to the Father of the Nation and martyrs of Quit India Movement	7
OBSERVATION BY THE SPEAKER	
Commemoration of 75th anniversary of Quit India Movement	8
ADDRESS BY THE SPEAKER	8-14
SPECIAL DISCUSSION TO COMMEMORATE THE 75TH ANNIVERSARY OF QUIT INDIA MOVEMENT	15-105
Shri Narendra Modi	15-25
Shrimati Sonia Gandhi	26-28
Dr. M. Thambidurai	29-34
Prof. Sugata Bose	35-43
Shri Anandrao Adsul	44-48
Shri Thota Narasimham	49-50
Shri A.P. Jithender Reddy	51-54

Shrimati Rama Devi	55-56
Shri Prem Das Rai	57
Shri Kaushalendra Kumar	58-59
Shri Vijay Kumar Hansdak	60
Shri Ajay Misra Teni	61
Shri N.K. Premachandran	62-66
Shri Bhairon Prasad Mishra	67
Shri Jose K. Mani	68
Shri P. Karunakaran	69-74
Shri Tathagata Satpathy	75-77
Kunwar Haribansh Singh	78
Shri H.D. Devegowda	79-81
Shri Jai Prakash Narayan Yadav	82-83
Shri Prem Singh Chandumajra	84
Dr. Arun Kumar	85-86
Shri P.R. Sundaram	87
Shri E.T. Mohammad Basheer	88
Shri Balbhadra Majhi	89-90
Shri Mekapati Raja Mohan Reddy	91
Dr. Mamtaz Sanghamita	92
Shri Mallikarjun Kharge	93-97
Shri Kapil Moreshwar Patil	98-99
Shri Ashwani Kumar Choubey	100-104
Shri Bhartruhari Mahtab	105-105G
Resolution – Adopted	106-107

OBITUARY REFERENCE 108

WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

Starred Question Nos. 321 to 340 109-164

Unstarred Question Nos. 3681 to 3910 165-618

ANNEXURE – I

Member-wise Index to Starred Questions 619

Member-wise Index to Unstarred Questions 620-625

ANNEXURE – II

Ministry-wise Index to Starred Questions 626

Ministry-wise Index to Unstarred Questions 627-628

OFFICERS OF LOK SABHA

THE SPEAKER

Shrimati Sumitra Mahajan

THE DEPUTY SPEAKER

Dr. M. Thambidurai

PANEL OF CHAIRPERSONS

Shri Arjun Charan Sethi

Shri Hukmdeo Narayan Yadav

Shri Anandrao Adsul

Shri Pralhad Joshi

Dr. Ratna De (Nag)

Shri Ramen Deka

Shri Konakalla Narayana Rao

Shri Hukum Singh

Shri K.H. Muniyappa

Dr. P. Venugopal

SECRETARY GENERAL

Shri Anoop Mishra

LOK SABHA DEBATES

LOK SABHA

Wednesday, August 09, 2017/ Shravana 18, 1939 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[HON. SPEAKER *in the Chair*]

WELCOME TO PARLIAMENTARY DELEGATION FROM SEYCHELLES

HON. SPEAKER: Hon. Members, at the outset, I have to make an announcement. On behalf of the hon. Members of the House and on my own behalf, I have great pleasure in welcoming hon. Patrick Pillay, Speaker of the National Assembly of Seychelles and Members of the Parliamentary Delegation from the Republic of Seychelles who are on a visit to India as our honoured guests. They arrived in India on Tuesday, 8th August, 2017 and are now seated in the Special Box. Besides Delhi, they will also visit Jaipur before their final departure from India on Monday, 14th August, 2017.

We wish them a happy and fruitful stay in our country. Through them, we convey our greetings and best wishes to the National Assembly, the Government and the friendly people of Seychelles.

11.03 hours

REFERENCE BY THE SPEAKER

Homage to the Father of the Nation and martyrs of Quit India Movement

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, आज का दिन स्मरणीय है क्योंकि आज हम 'भारत छोड़ो' आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। 9 अगस्त, 1942 के दिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने 'भारत छोड़ो' आंदोलन का शंखनाद कर पूरे राष्ट्र को साम्राज्यवादी शासन की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए समस्त देशवासियों को एक साथ खड़े होने का आह्वान किया था।

इस अवसर पर हम राष्ट्रपिता और स्वाधीनता संग्राम में अपने प्राणों की आहुति देने वाले सभी शहीदों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

अब सभा स्वाधीनता सेनानियों की पुण्य स्मृति में थोड़ी देर मौन खड़ी रहेगी।

11.03 ¾ hours

(The Members then stood in silence for a short while.)

11.04 hours

OBSERVATION BY THE SPEAKER

Commemoration of 75th anniversary of Quit India Movement

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, आज 9 अगस्त है। आज 'भारत छोड़ो' आंदोलन के 75 वर्ष पूरे हो गए हैं। यह हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण अवसर है। इसलिए मुझे लगता है कि जैसे हम साधारणतः पहले प्रश्नकाल चलाते हैं, लेकिन इस 75 वर्षों की भावना के कारण आज हम प्रश्नकाल न चलाते हुए, इस दिन पर सभी की भावनाओं को व्यक्त करने के लिए इस दिन को एक स्पेशल ओकेज़न के तौर पर इस समय को निर्धारित कर के इस पर चर्चा शुरू करते हैं।

11.05 hours

ADDRESS BY THE SPEAKER

माननीय अध्यक्ष : भारत की आज़ादी के 70 वर्ष पूर्ण होने पर एवं स्वतंत्रता संघर्ष के सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव "भारत छोड़ो आंदोलन " के 75 वर्ष पूर्ण होने पर उन क्षणों को सभा के सभी सदस्य एवं समस्त देशवासियों के साथ पुनः स्मरण करते हुए मुझे गर्व की अनुभूति हो रही है। हमारे स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में सन् 1942 में इसी दिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने ऐतिहासिक "भारत छोड़ो आंदोलन " शुरू करने का आह्वान करते हुए, भारत से अंग्रेजों की सुव्यवस्थित वापसी की मांग की, जिसने विदेशी हुकूमत की नींव हिला दी। जिसके कारण हम विदेशी शासन से अपनी मातृभूमि को आज़ाद करा सके। यद्यपि भारत छोड़ो आंदोलन स्वतंत्रता से पूर्व अंतिम आंदोलन था, पर भारत में स्वतंत्रता के लिए किए गए आंदोलनों का इतिहास बहुत लम्बा है। यह सच है, एक समय भारत में ब्रिटिशों की हुकूमत हो गयी थी, पर इससे बड़ा सच यह है कि पहले दिन से ही जहां-जहां भी यानी जैसे ही अंग्रेजों की यह मानसिकता भारतीयों की समझ में आयी वहां-वहां भारत को स्वतंत्र कराने के प्रयास भी तुरन्त आरम्भ हो गए थे। जहां ब्रिटिश अपनी औपनिवेशिक सत्ता का आनंद ले रहे थे, वहीं स्थानीय शासक, किसान, बुद्धिजीवी, आम जनता एवं विभिन्न राज्यों के सैनिकों के मन में स्वराज्य की भावना उमड़ रही थी। जगह-जगह विदेशी शासन के षिलाफ़ विभिन्न रूपों में जनआक्रोश झलकता था। इस परचक्र के षिलाफ़ सत्त आक्रोश फूट रहा था। इसमें ओडिशा का पाइक विद्रोह, वे स्वाधीनता की मशाल बनने के लिए आतुर थे। दक्षिण भारत में धीरन चिन्नमलई, कट्टबोमन और झारखण्ड के संथाल विद्रोह के बारे में भी सभी ने सुना है। रामसिंह कूका भी उन्हीं में से एक स्वतंत्रता

आंदोलनकारी थे। महान स्वतंत्रता सेनानियों को सब लोग जानते थे, परन्तु ऐसे अनेक स्वतंत्रता सेनानी हुए हैं, जिनके बारे में बहुत कम लोग जानते हैं। कर्नाटक के किट्टूर की रानी चेन्नमा हो, श्यामजी कृष्ण वर्मा हो, पूर्ववर्ती बंगाल की मतंगिनी हाजरा हो, नागालैण्ड की रानी गैडिनलियू हो और कितने ही ऐसे नाम या मैं कहूं वासुदेव बलवंत फड़के, महाराष्ट्र का एक सामान्य मजदूर बाबू गेनू, ऐसे कई नाम हैं, ऐसे लोग हैं, जिन्होंने स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिए, लेकिन गुमनाम रहे। महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक का घोष वाक्य "स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर ही रहूंगा "। वहां से जो शुरूआत होती है तो गांधी जी का जो कथन था- "Let every Indian consider himself to be a free man." यह भावना उन्होंने अगस्त क्रांति के समय व्यक्त की थी। इस सब से यह बात समझ में आती है कि किस तरह से जगह-जगह हो रहे छोटे-छोटे आंदोलनों को समेट कर राष्ट्रव्यापी आह्वान सन् 1942 में हुआ। भारत छोड़ो आंदोलन में करेंगे या मरेंगे का नारा देकर स्वतंत्रता की इस लड़ाई को गति दी थी। यह एक ऐसा आंदोलन था, जब अंग्रेजों को यह एहसास हो गया कि अब भारत में राज करना सम्भव नहीं है। मैं पटना के सचिवालय में तिरंगा फहराने वाले उन वीर शहीदों के साहस, आत्मत्याग और बलिदान का स्मरण करते हुए अत्यंत अभिभूत हूं, जिन्होंने ब्रिटिश पुलिस की गोलियों की परवाह न करते हुए सचिवालय पर तिरंगा फहराकर भारत की स्वतंत्रता की पूर्व उद्घोषणा कर दी। ऐसी ही साहसिक घटनाएं देश के अन्य शहरों मुंगेर हो, मुर्शिदाबाद हो, सतारा हो, बलिया हो, ऐसे अनेक छोटे शहरों और इलाकों ने अपने आपको ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र घोषित कर दिया था।

8 अगस्त, 1942 की देर शाम मुम्बई के ग्वालिया टैंक मैदान की बैठक में भारत छोड़ो आंदोलन प्रस्ताव पेश हुआ। उसी रात्रि को अंग्रेजों भारत छोड़ो के प्रस्ताव पर सर्वसम्मति से मुहर लग गई। 90 मिनट के अपने भाषण में महात्मा गांधी जी ने स्पष्ट कर दिया था कि करेंगे या मरेंगे। ब्रिटिश सरकार ने आधी रात में एक के बाद एक धरपकड़ शुरू कर दी। व्यापक गिरफ्तारियों से राष्ट्र हतप्रभ जरूर हुआ, लेकिन मृत नहीं हुआ, भावना जीवित थी। भारत छोड़ो आंदोलन की सबसे बड़ी सफलता यह थी कि इस आंदोलन ने देश के बुद्धिजीवी वर्ग के साथ-साथ गाँव-देहात के करोड़ों किसान, मजदूर और नौजवानों की चेतना को झकझोरा एवं उनको प्रत्यक्ष रूप से इस स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा था।

आज हम भारत छोड़ो आंदोलन में शहीद हुए उन बेनाम वीरों को श्रद्धांजलि देते हैं, जिनके हृदय में देशभक्ति, उसकी भावना, सदा सर्वदा प्रज्ज्वलित होने वाली मशाल उनके मन में जलती थी और जिनकी आंखों में स्वतंत्र नवभारत के सपने थे। उन वीरों, महापुरुषों, संत आत्माओं के दृष्टिकोण को समझने, अपनाने एवं उनके प्रचार-प्रसार करने का पुनित कर्तव्य हम सभी का है, क्योंकि यह जो भाव है, मैं मानती हूं कि कई नाम ऐसे निकलेंगे। आज हम-आप यहां बैठे हैं और चर्चा करेंगे। आप अगर अपने घर में दादी-नानी से कथाएं सुनें, दादा जी से कथा सुनें, ताऊ जी से कुछ पूछें या अपने गांव में जाकर चर्चा करेंगे तो

पता चलेगा कि हर घर से कुछ न कुछ बलिदान हुआ है। हो सकता है कि किसी ने क्रांतिकारियों को बचाने के लिए अपना घर बेच दिया हो, बलिदान न दिया हो, मगर अपना घर बेच दिया, सर्वस्व समर्पण कर दिया। गांधी जी की कथा मैंने सुनी है कि उनके प्रवचन जब अंत में झोली घूमती थी तो महिलाएं तुरंत अपने गले में पड़ी चेन को उतार कर उस झोली में डालती थीं, वे सोचती नहीं थीं। यह भी एक प्रकार से सर्वस्व का दान सामान्य से सामान्य व्यक्ति ने उस समय किया है। एक प्रकार से हर घर में ये भाव उस समय थे। यह होता था। मैं तो कहूंगी कि उस समय ही होता था, ऐसा नहीं है। आज भी है, हमें जगाना पड़ेगा। क्योंकि मैंने अपनी आंखों से देखा है। मैं आपको एक बात बताना चाहूंगी कि यह तो मैंने उस समय सुना कि एक महिला को जब कहा गया कि उस समय केसरी पर प्रतिबंध था। मैं एक भाव बताती हूं। केसरी पर प्रतिबंध था। मेरे गांव में ही चर्चा थी। मुझे ही दादी-नानी ने कहा कि केसरी पर प्रतिबंध लग गया। अब केसरी घर पर कैसे आएगा। महाराष्ट्र के लोगों को भी मालूम है कि केसरी पढ़ना घर-घर में एक ऐसा भाव था। क्योंकि उसमें जो लिखा जाता था, उमसें भाव था। अग्रलेख लिखते समय लोकमान्य तिलक को यह संदेशा आया कि आपके पुत्र की मृत्यु हो गई है। अग्रलेख लिखते समय इधर से उधर न देखते हुए उन्होंने एक ही वाक्य बोला था कि चलो "स्वतंत्रता संग्राम के इस होम मेरे घर का एक कंडा समर्पित हो गया" गोहरी शब्द का था एक कंडा। यह भाव से लिखा जाता था। इसलिए मुझे मालूम है कि जब ब्रिटिश शासन ने केसरी पर प्रतिबंध लगाया कि उसे कोई नहीं पढ़ेगा, तब एक घर में चर्चा चल रही थी। वह आज के शासकीय नौकरशाहों को भी समझना चाहिए। यह हुआ कि मैं तो शासकीय नौकर हूं, सर्विस करता हूं, मध्यम वर्ग का व्यक्ति हूं और घर में चर्चा शुरू हो गई कि अब क्या करेंगे। कैसे केसरी लगाएंगे, कैसे पढ़ेंगे और लगाना है यह ही नहीं, खरीदना है। क्योंकि वह भी एक प्रकार से मदद है, फ्री में नहीं लेना है। उस वक्त जब यह चर्चा शुरू हो गई तो घर में जो महिला थी, उसने कहा कि इसमें क्या बात है। आप अपने नाम से केसरी मत लीजिए, मेरे नाम से तो केसरी आ ही सकता है। घर में दूसरी बात शुरू हो गई कि आप तो पढ़ी-लिखी नहीं हो। उन्होंने जवाब दिया कि तो क्या हुआ, आप पढ़कर सुना दीजिए। किंतु मेरे नाम से इस घर में केसरी आएगा। घर-घर में यह भाव था। लेकिन आज यह भाव मरा भी नहीं है। मैं दूसरी बात जो आपसे कहना चाहूंगी, थोड़ी विस्तार में जरूर है। यह भाव मरा नहीं है।

मैं आपको अपनी आंखों देखी बताती हूं, स्वातंत्र्य वीर सावरकर, किसी-किसी के द्वारा उन पर भी प्रश्नचिह्न लगते हैं। मगर जो भाव है, उन्होंने एक प्रकार से सर्वस्व होम किया था। परंतु स्वातंत्र्य वीर सावरकर पर जब सिनेमा बन रहा था, सुधीर फड़के का नाम हम बहुत लोग जानते हैं, वह सिनेमा बना रहे थे और उसके लिए वह गांव-गांव जाकर पैसा एकत्रित कर रहे थे। उनके मन में भाव था कि स्वातंत्र्य वीर की कहानी मुझे देश के सामने लानी है। मैं अपनी आंखों देखी बताती हूं, हमारे इंदौर में भी वह आये थे और वहां उन्होंने सभा भी की। उनका कार्यक्रम हुआ और कार्यक्रम के बाद उन्होंने कहा कि मैं वीर सावरकर पर

सिनेमा बनाना चाहता हूं, पिक्चर बनाना चाहता हूं। मैं गांव-गांव जा रहा हूं, धन संग्रह कर रहा हूं और आप जो भी कुछ मुझे दे सकें, दे दें। जो दे सकते थे, हरेक ने कुछ न कुछ डिक्लेयर किया, किसी ने चैक दिया, किसी ने कुछ दिया। एक सामान्य घर की महिला उस समय वहां आई, मैं देखती रह गई कि यह क्या करेगी। उसने कहा मेरे यहां बैंक अकाउंट में बहुत कुछ तो नहीं है, मगर यह एक-एक सोने की चूड़ी बस मेरे पास है और वह उन्होंने झोली में डाल दी कि मेरी तरफ से सावरकरजी का सिनेमा बनाइये। क्योंकि मैं मानती हूं और जानती हूं कि वह क्या थे। यह भाव तो आज भी है, बस इसे जाग्रत करने की आवश्यकता है। जिस जोश, साहस, संकल्प, आस्था, दृढ़निश्चय और आत्मविश्वास के साथ हमने आजादी पाई थी, उन्हीं गुणों को पुनः आत्मसात करके हम अपने सपनों का सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम, उत्कृष्ट, सशक्त, समृद्ध एवं विश्वस्तरीय भारत बना सकते हैं।

हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने उस समय कहा था - अंग्रेजो भारत छोड़ो। मेरे मन में आज एक भाव है, आज जब हम सब लोग यहां बैठे हैं, हम एक प्रकार से जनप्रतिनिधि हैं। हम लाख-लाख लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मुझे याद है कि छत्रपति शिवाजी के लिए एक वाक्य बोला गया था, एक सेनानी ने कहा था कि आप लड़ाई पर नहीं जाओगे, क्यों नहीं जाओगे, आप आगे नहीं जाओगे। एक बहुत प्रसिद्ध वाक्य उन्होंने मराठी में कहा था - लाख मेलेतरी चालतील लाखाच्या पोशिंदा मरून चालणार नाहीं। यानी लाखों लोग मरे तो चलेगा, लेकिन महाराज आप लाखों लोगों को पोषण देने वाले हो। वह पोषण यानी कोई अन्न प्रदान करना नहीं, मगर एक मानसिक पोषण भी होता है। हम सब लोग लाख-लाख लोगों के जनप्रतिनिधि हैं, हमें जाग्रत रहना है। मुझे आज ऐसा लगता है कि तब हमने कहा था - अंग्रेजो भारत छोड़ो, परंतु अब हमें भारत जोड़ो आंदोलन की जरूरत है। एक ऐसा आंदोलन जो कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक देश के सभी हिस्सों में चलाया जाए, ताकि हम एक सबल और संगठित भारत का निर्माण कर सकें। हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने एक ऐसे भारत का सपना देखा था, जिसमें समावेशी विकास हो, हमें विकास के लाभों को देश के सभी भागों तक पहुंचाना है और अभाव को दूर करने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। महात्मा गांधी जी ने उस समय कहा था कि निर्धनतम वर्ग की ओर सबसे पहले ध्यान दिया जाना चाहिए। जिसे एक प्रकार से पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने दोहराया था - पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना और विकास पहुंचाना, यह अंत्योदय की कल्पना की थी।

मैं आप सबसे इतना ही कहना चाहूंगी कि आज हम यहां विचार करेंगे, हम यहां अपनी-अपनी बात रखेंगे, परंतु हम सब लोग उसमें यह भाव रखें कि राष्ट्र के लिए कुछ बोल रहे हैं। एक दिन यह सब कुछ उन्नत होकर, हम अपने आपको उन्नत करेंगे, अपने विचारों को उन्नत करेंगे तो ही हम लाखों के प्रतिनिधि कहलाने लायक रहेंगे। इसलिए मैं इतना ही कहूंगी कि आज एक बात ध्यान रखें कि लोकमान्य तिलक ने उस समय कहा था - स्वराज्य माझ्या जन्मसिद्ध अधिकार आहेत, तो मी मिडवीनच। स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध

अधिकार है और मैं उसे लेकर रहूंगा। आज हमें एक बात सोचनी आवश्यक हो गई है और हम सब सोचें कि सुराज मेरा परम कर्तव्य है और मैं उसे पूरा करूंगा ही। इस भावना के साथ मैं आप सबसे निवेदन करूंगी कि हम अपने-अपने विचार इस विषय पर रखें।

उसके बाद सबसे आखिर में, मुझे मालूम है कि कुछ लोगों के मन में भाव है, आज एक ऐसी घटना भी हो गई है, मगर मैं वह महिला गृहिणी के नाते आप को कहती हूँ कि कई बार हमने यह भी देखा है कि घर की गृहिणी कहती है कि सब दुखों को एक साथ बाजू में रखो, अभी बाजू में रखो और उस दुख को बाजू में रख कर के अपने पूरे कुटुम्ब का विचार करो अगर कुछ आवश्यक है। मैं आज वही कहूंगी कि पूरे राष्ट्र का विचार हमें पहले करना है। अपना दुख अपने पास है, हमारी इस चर्चा के बाद उसको व्यक्त करेंगे ही तो हम आज राष्ट्र के लिए एक प्रकार का एक संकल्प लेंगे। आज हम 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। अंग्रेजों को हमने कहा था कि भारत छोड़ो, मगर किसलिए कहा, स्वतंत्रता तो मिली पांच साल बाद, सन् 1947 में तो आने वाले पांच साल में हम क्या कर रहे हैं। जब स्वतंत्रता की वह 75वीं वर्षगांठ आएगी, इसके लिए संकल्प करना पड़ेगा। मैं चर्चा के लिए आप सबको आमंत्रित करती हूँ।

11.21 hours

SPECIAL DISCUSSION TO COMMEMORATE THE 75th ANNIVERSARY OF THE QUIT INDIA MOVEMENT

माननीय अध्यक्ष : माननीय प्रधान मंत्री जी।

प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी) : आदरणीय अध्यक्ष महोदया, मैं आपका और सदन के सभी आदरणीय सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ और हम सब आज गौरव भी महसूस कर रहे हैं कि अगस्त क्रांति का स्मरण करने का इस सदन के पवित्र स्थान पर हम लोगों को सौभाग्य मिला है। हम में से बहुत से लोग हैं, जिन्हें शायद अगस्त क्रांति, नौ अगस्त और उन घटनाओं का स्मरण होगा, लेकिन उसके बाद भी हम लोगों के लिए भी पुनः स्मरण एक प्रेरणा का कारण बनता है। सामाजिक जीवन में ऐसी महत्वपूर्ण घटनाओं का बार-बार स्मरण, जीवन की भी अच्छी घटनाओं का बार-बार स्मरण, जीवन को एक नई ताकत देता है, राष्ट्र जीवन को भी एक नई ताकत देता है। उसी प्रकार से हमारी जो नई पीढ़ी है, उन तक भी यह बात पहुंचाना हम लोगों का कर्त्तव्य रहता है। पीढ़ी दर पीढ़ी इतिहास के इन स्वर्णिम पृष्ठों को उस समय के माहौल को, उस समय के हमारे महापुरूषों के बलिदान को, कर्त्तव्य को, सामर्थ्य को, आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने का भी हर पीढ़ी का दायित्व रहता है। जब अगस्त क्रांति के 25 साल हुए, 50 साल हुए, देश के सभी लोगों ने उन घटनाओं का स्मरण किया था। आज 75 साल हो रहे हैं और मैं इसे बड़ा महत्वपूर्ण मानता हूँ और इसलिए मैं अध्यक्ष महोदया जी का आभारी हूँ कि आज हमें यह अवसर मिला है। देश के स्वतंत्रता आंदोलन में 09 अगस्त एक ऐसी अवस्था में है, इतने व्यापक और इतने तीव्र आंदोलन की अंग्रेजों ने भी कल्पना नहीं की थी। महात्मा गांधी एवं सभी वरिष्ठ नेता जेल चले गए और वही पल था कि अनेक नए नेतृत्व ने जन्म लिया। लाल बहादुर शास्त्री, राम मनोहर लोहिया, जय प्रकाश नारायण आदि अनेक वीर युवाओं ने उस समय जो खाली जगह थी, उसको भरा और आंदोलन को आगे बढ़ाया।

इतिहास की ये घटनायें हम लोगों के लिए एक नई प्रेरणा, नया सामर्थ्य, नया संकल्प, नया कर्तव्य जगाने के लिए किस प्रकार से अवसर बनें, यह हम लोगों का निरन्तर प्रयास रहना चाहिए। वर्ष 1947 में देश आजाद हुआ, एक प्रकार से वर्ष 1857 से लेकर वर्ष 1947 तक आजादी के आन्दोलन के अलग-अलग पड़ाव आये, अलग-अलग पराक्रम हुए, अलग-अलग बलिदान हुए। उतार-चढ़ाव भी आये, अलग-अलग मोड़ पर से यह आन्दोलन गुजरा, लेकिन वर्ष 1947 की आजादी के पहले वर्ष 1942 की घटना एक प्रकार से अन्तिम व्यापक आन्दोलन था, अन्तिम व्यापक जन संघर्ष था और उस जन संघर्ष ने आजादी के लिए देशवासियों को सिर्फ समय का ही इन्तजार था, वह स्थिति पैदा कर दी थी। जब हम आजादी के इस आन्दोलन की ओर देखते हैं तो वर्ष 1942 एक ऐसी पीठिका तैयार हुई थी, वर्ष 1857 का स्वतंत्रता संग्राम,

एक साथ देश के हर कोने में आजादी का बिगुल बजा था। उसके बाद महात्मा गाँधी का विदेश से लौटना, लोकमान्य तिलक का "पूर्ण स्वराज" और "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है", के भाव को प्रकट करना। वर्ष 1930 में महात्मा गाँधी का दांडी मार्च, नेताजी सुभाष बोस द्वारा आजाद हिन्द फौज की स्थापना, अनेक वीर भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरू, चन्द्रशेखर आजाद, चाफेकर बंधु अनगिनत वीर अपने-अपने समय पर बलिदान देते रहे। इन सारों ने एक पीठिका तैयार की और इस पीठिका का परिणाम था कि बयालीस ने देश को एक उस छोर पर लाकर रख दिया कि अब नहीं तो कभी नहीं, आज नहीं होगा तो फिर कभी नहीं होगा, यह मिजाज देशवासियों का बन गया था। इसके कारण उस आन्दोलन में इस देश का छोटा-मोटा हर व्यक्ति जुड़ गया था। कभी लगता था कि आजादी का आन्दोलन एक ऐलीट क्लास के द्वारा चल रहा है, लेकिन बयालीस की घटना, देश का कोई कोना ऐसा नहीं था, देश का कोई वर्ग ऐसा नहीं था, देश की कोई सामाजिक अवस्था ऐसी नहीं थी कि जिसने इसे अपना न माना हो और गाँधी के शब्दों को लेकर वे चल पड़े थे। यही तो आन्दोलन था, जब अन्तिम स्वर में बात आई कि "भारत छोड़ो" और सबसे बड़ी बात है कि महात्मा गाँधी के पूरे आन्दोलन में जो भाव कभी प्रकट नहीं हो सकता था, पूरे गाँधी के चिन्तन-मनन और विचार-आचार को देखें, उससे हटकर घटना घटी। इस महापुरूष ने कहा कि "करेंगे या मरेंगे।" गाँधी के मुँह से "करेंगे या मरेंगे" शब्द देश के लिए अजूबा था और इसलिए गाँधी को भी उस समय कहना पड़ा था और उन्होंने यह शब्द कहा था कि आज से आपमें हर एक को, स्वयं को एक स्वतंत्र महिला या पुरूष समझना चाहिए और इस प्रकार काम करना चाहिए मानो आप स्वतंत्र हैं। मैं पूर्ण स्वतंत्रता से कम किसी भी चीज पर संतुष्ट होने वाला नहीं हूँ। हम करेंगे या मरेंगे। ये बापू के शब्द थे और बापू ने स्पष्ट भी किया था कि मैंने अपने अहिंसा के मार्ग को छोड़ा नहीं है, लेकिन आज स्थिति ऐसी है और उस समय जन-सामान्य का दबाव ऐसा था कि बापू के लिए भी उसका नेतृत्व संभालते हुए उन जन-भावनाओं के अनुकूल इन शब्दों का प्रयोग करना पड़ा था।

मैं समझता हूँ कि उस समय समाज के जब सभी वर्ग जुड़ गए - गाँव हो, किसान हो, मज़दूर हो, टीचर हो, स्टूडैंट हो, हर कोई इस आंदोलन के साथ जुड़ गए और 'करेंगे या मरेंगे' की बात कहते थे। बापू तो यहाँ तक कहते थे कि अंग्रेज़ों की हिंसा के कारण कोई भी शहीद होता है तो उसके शरीर पर एक पट्टी लिखनी चाहिए - 'करेंगे या मरेंगे,' और वह इस आज़ादी के आंदोलन का शहीद है, इस प्रकार की ऊंचाई तक इस आंदोलन को बापू ने ले जाने का प्रयास किया था। उसी का परिणाम था कि भारत गुलामी की जंज़ीरों से मुक्त हुआ। देश उस मुक्ति के लिए छटपटा रहा था। नेता हो या नागरिक, किसी की इस भावना की तीव्रता में कसू भर भी अंतर नहीं था। मैं समझता हूँ कि देश जब उठ खड़ा होता है, सामूहिकता की शक्ति जब पैदा होती है, लक्ष्य निर्धारित होता है और निर्धारित लक्ष्य पर चलने के लिए लोग कृत-

संकल्प होकर चल पड़ते हैं तो 1942 से 1947 - पाँच साल के भीतर बेड़ियाँ चूर-चूर हो जाती हैं और माँ भारती आज़ाद हो जाती है।

रामवृक्ष बेनीपुरी ने एक किताब लिखी है - 'ज़ंज़ीरें और दीवारें।' उस परिस्थिति का वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है कि एक अद्‌भुत वातावरण पूरे देश में बन गया था।
उस पल को उन्होंने शब्दांकित किया था -

> "हर व्यक्ति नेता बन गया और देश का प्रत्येक चौराहा 'करो या मरो' आंदोलन का दफ्तर बन गया। देश ने स्वयं को क्रांति के हवन कुंड में झोंक दिया। क्रांति की ज्वाला देश भर में धू-धू करके जल रही थी। बंबई ने रास्ता दिखा दिया, आवागमन के सारे साधन ठप हो चुके थे, कचहरियाँ वीरान हो चली थीं। भारत के लोगों की वीरता और ब्रिटिश सरकार की नृशंसता की खबरें सब दूर पहुँच रही थीं। जनता ने 'करो या मरो' के गांधीवादी मंत्र को अच्छी तरह दिल में बैठा दिया था। "

उस समय का यह वर्णन उस किताब में जब पढ़ते हैं, तब पता लगता है कि किस प्रकार का माहौल होगा। एक वह समय था, और यह बात सही है कि ब्रिटिश उपनिवेशवाद का आरंभ हिन्दुस्तान में हुआ और इस घटना के बाद उसका अंत भी हिन्दुस्तान से हुआ था। भारत आज़ाद होना सिर्फ भारत की आज़ादी नहीं थी। 1942 के बाद, विश्व के जिन-जिन भूभाग में, अफ्रीका और एशिया में इस उपनिवेशवाद के खिलाफ एक ज्वाला भड़की, उसका प्रेरणा केन्द्र भारत बन गया था। इसलिए भारत सिर्फ भारत की आज़ादी नहीं, आज़ादी की ललक विश्व के कई भागों में फैलाने में भारत के जनसामान्य का संकल्प और कर्तुत्व कारण बन गया था और कोई भी भारतीय इस बात के लिए गर्व कर सकता है। उसको हमने देखा कि एक बार भारत आज़ाद हुआ, तो उसके बाद एक के बाद एक उपनिवेशवाद के सारे लोगों के झंडे ढहते गए और आज़ादी सब दूर पहुँचने लगी। कुछ ही वर्षों में दुनिया के इन सारे देशों को आज़ादी प्राप्त हो गई। यह काम बताता है कि यह भारत की प्रबल इच्छाशक्ति का एक उत्तमोत्तम परिणाम था। हमारे लिए सबक यही है कि जब हम एक बनकर के, संकल्प लेकर के, पूरे सामर्थ्य के साथ निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जुड़ जाते हैं तो यह देश की ताकत है कि हम देश को संकटों से बाहर निकाल देते हैं, देश को गुलामी की ज़ंज़ीरों से बाहर निकाल सकते हैं, देश को नए लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तैयार कर सकते हैं, यह इतिहास ने बताया है। उस समय इस पूरे आंदोलन को और पूज्य बापू के व्यक्तित्व को लगते हुए राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी की जो कविता है, बापू का सामर्थ्य क्या है, उसको वह प्रकट करती है। उस कविता में उन्होंने कहा था -

चल पड़े जिधर दो डग, मग में
चल पड़े कोटि पग उसी ओर;
गड़ गयी जिधर भी एक दृष्टि,
गड़ गए कोटि दृग उसी ओर,

जिस तरफ गांधी के दो कदम चल देते थे, उस तरफ अपने आप करोड़ों लोग चल पड़ते थे। जिधर गांधी जी की दृष्टि टिक जाती थी, उधर करोड़ों-करोड़ आंखें देखने लग जाती थीं। इसलिए, आज जब हम वर्ष 2017 में हैं, हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि आज हमारे पास गांधी नहीं हैं, उस समय जो ऊंचाई वाला नेतृत्व था, वह आज हमारे पास नहीं है। लेकिन, सवा सौ करोड़ देशवासियों के विश्वास के साथ बैठे हुए हम सब लोग मिल करके उन सपनों को पूरा करने का प्रयास करें तो मैं मानता हूं कि गांधी के सपनों को, उन स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को पूरा करना मुश्किल काम नहीं है। आज का यह अवसर इसी बात के लिए है। उस समय भी वर्ष 1942 में जो वैश्विक हालात थे, वह भारत की आज़ादी के लिए बड़ा अनुकूल था। जो भी उस इतिहास से परिचित हैं, उन्हें मालूम है। मैं समझता हूं कि आज फिर से एक बार वर्ष 2017 में, जबकि 'क्वीट इंडिया मूवमेंट' के हम 75 साल मना रहे हैं, उस समय विश्व में वह अनुकूलता है, जो भारत के लिए बहुत सहानुकूल है और उस अनुकूल व्यवस्था का फ़ायदा हम जितनी जल्दी उठा लें, जैसे उस समय विश्व के कई देशों के लिए हम प्रेरणा का कारण बने थे, अगर आज हम मौका ले लें, तो आज फिर से एक बार हम विश्व के कई देशों के लिए उपयोगी हो सकते हैं, प्रेरणा का कारण बन सकते हैं, ऐसे मोड़ पर आज हम खड़े हैं। वर्ष 1942 और 2017, इन दोनों के वैश्विक परिवेश में भारत का महात्म्य, भारत के लिए अवसर समान रूप से खड़े हैं और उस समय हम इस बात को कैसे लें, इस जिम्मेदारी को कैसे लें। मैं मानता हूं, इतिहास के इन प्रकरणों से, सामर्थ्य से प्रेरणा लेकर कि हमारे लिए दल से बड़ा देश होता है, राजनीति से ऊपर राष्ट्र नीति होती है, मेरे अपने से ऊपर सवा सौ करोड़ देशवासी होते हैं, अगर उस भाव को लेकर हम उठ चलें, हम सब मिल कर आगे बढ़ें तो हम इन समस्याओं के खिलाफ सफलतापूर्वक आगे बढ़ सकते हैं। हम इस बात से इन्कार कैसे कर सकते हैं कि भ्रष्टाचार रूपी दीमक ने देश को कैसे तबाह करके रखा हुआ है। राजनीतिक भ्रष्टाचार हो या सामाजिक भ्रष्टाचार हो या व्यक्तिगत भ्रष्टाचार हो, कल क्या हुआ, कब किस ने क्या किया, इसके विवाद के लिए समय बहुत होते हैं, लेकिन आज इस पवित्र पल में हम आगे कोई ईमानदारी का उत्सव मना सकते हैं, ईमानदारी का संकल्प लेकर क्या देश का नेतृत्व कर सकते हैं, क्या देश को ले जा सकते हैं, यह समय की मांग है, देश के सामान्य मानवी की मांग है।

गरीबी, कुपोषण, अशिक्षा, ये हमारे सामने चुनौतियां हैं। इन चुनौतियों को हम सरकार की चुनौतियां न मानें। ये चुनौतियां देश की हैं, देश के गरीब के सामने संकट भरे सवाल खड़े हैं और इसलिए देश के लिए जीने-मरने वाले, देश के लिए संकल्प करने वाले हम सब लोगों का दायित्व बनता है कि इसको पूरा करने के लिए हम कुछ मुद्दों पर एक हों। वर्ष 1942 में भी अलग-अलग धारा के लोग थे, हिंसा में विश्वास

करने वाले भी लोग थे। नेताजी सुभाष बाबू की सोच अलग थी, लेकिन '42 में सबने एक स्वर से कह दिया था कि आज तो गांधी के नेतृत्व में 'क्वीट इंडिया', यही हमारा मार्ग है।

हमारे लालन-पालन तथा विचारधारा अलग-अलग रही होंगी, लेकिन यह समय की मांग है कि हम कुछ बिंदुओं से देश को मुक्त कराने के लिए संकल्प का अवसर लेकर चलें; चाहे गरीबी हो, भुखमरी हो, अशिक्षा हो या अंधश्रद्धा हो। महात्मा गांधी जी के ग्राम स्वराज का सपना कितना पीछे छूट गया है। क्या कारण है कि लोग गांवों को छोड़ कर शहरों की ओर बस रहे हैं। गांव की उस चिंता को तथा गांधी जी के मन में जो गांव था, क्या हम अपने भीतर उनको पुनजीर्वित कर सकते हैं। गांव, गरीब, किसान, दलित, पीड़ित, शोषित, वंचितों के जीवन के लिए अगर हम कुछ कर सकते हैं, तो हमें मिलकर करना है। यह सवाल मेरे और तेरे का नहीं है, यह सवाल उस पार या इस पार का नहीं है, बल्कि यह सवाल हम सभी का है, देश के सवा सौ करोड़ देशवासियों का है और सवा सौ करोड़ देशवासियों के जनप्रतिनिधियों का है। यही वह समय होता है जब हम लोगों को कुछ कर लेने के लिए वह प्रेरणा हमें शक्ति देती है और हम उसको लेकर आगे चल सकते हैं।

हम यह भी जानते हैं कि देश में जाने-अनजाने अधिकार भाव प्रबल होता चला गया और कर्तव्य भाव लुप्त होता गया। राष्ट्र जीवन के अंदर, समाज जीवन के अंदर अधिकार भाव का महात्मय उतना ही रहते हुए, अगर हम कर्तव्य भाव को थोड़ा सा भी कम आंकने लगेंगे, तो समाज जीवन में कितनी बड़ी मुसीबतें होंगी, दुर्भाग्य से हम लोगों के वे ऑफ लाइफ तथा हमारे चरित्र में कुछ चीजें घुस गई हैं, जिनमें हमें बुराई नहीं लगती कि हम लोग गलत कर रहे हैं। अगर मैं चौराहे पर रेड लाइट को छोड़कर या क्रॉस करके निकल जाता हूं, तो मुझे लगता ही नहीं है कि मैं कानून तोड़ रहा हूं। मैं कहीं पर थूक देता हूं, गंदगी करता हूं, लेकिन हमें लगता ही नहीं है कि मैं गलत कर रहा हूं। हम अपने कर्तव्य भाव से तथा एक प्रकार से हमारे जहन में, हमारे वे ऑफ लाइफ में इस प्रकार के नियमों को तोड़ना, कानूनों को तोड़ना एक स्वाभाव बनता चला जा रहा है। छोटी-छोटी घटनाएँ हिंसा की ओर ले जा रही हैं। अस्पताल में किसी डॉक्टर द्वारा अगर किसी पेशेंट का कुछ हुआ, डॉक्टर दोषी है या नहीं है, अस्पताल दोषी है या नहीं है, रिश्तेदार वहां जाते हैं और अस्पताल में आग लगा देते हैं, डॉक्टर को मारते-पीटते हैं। हर छोटी-मोटी घटना, अगर कहीं एक्सीडेंट हो गया, तो हम कार को जला देते हैं, ड्राईवर को मार देते हैं। यह जो प्रवृत्ति चली है, लॉ एबाइडिंग सिटिजन के नाते हमारा कर्तव्य होना चाहिए तथा हम मानने लगे हैं कि यह हमारे से छूट गया है। हमारे वे ऑफ लाइफ में ऐसी चीजें घुस गई हैं, जैसे हमें लगता ही नहीं है कि हम कानून तोड़ रहे हैं। इसलिए, यह लीडरशिप की जिम्मेवारी होती है, समाज के अंदर हम सभी की जिम्मेवारी होती है कि समाज के अंदर इन दोषों से मुक्ति दिला करके कर्तव्य भाव को जगाएं।

शौचालय एवं स्वच्छता का विषय मजाक का नहीं है। हम उन माँ-बहनों की परेशानी को समझें, तब हमें पता चलता है कि जब शौचालय नहीं होता है और रात के अंधेरे का इंतजार करते समय कैसे दिन बिताना पड़ता है। शौचालय बनाना एक काम है, लेकिन समाज की मानसिकता बदल करके शौचालय का उपयोग करना, जन सामान्य की शिक्षा के लिए आवश्यक है। हमें इस भाव को जगाना होगा। यह भाव कानूनों से नहीं होता है, कानून बनाने से नहीं होता है। कानून उसमें मदद कर सकता हैं, लेकिन कर्तव्य भाव जगाने से ज्यादा हो सकता है। इसलिए, हम लोगों को यह काम करना होगा। हमारे देश की माताएं-बहनें देश के अंदर तथा कम से कम देश पर जो उनका बोझ है, देश को कम से कम जिनका बोझ सहना पड़ता है। अगर वह कोई वर्ग है, तो इस देश की माताएं, बहनें व महिलाएं हैं। उनकी सामर्थ्य हमें कितनी ताकत दे सकती है, उनकी भागीदारी हमारे विकास के अंदर हमें कितना बल दे सकती हैं। पूरी आजादी के आंदोलन में देखिए, महात्मा गांधी जी के साथ जहां-जहां भी आंदोलन हुआ, अनेक ऐसी माताएं-बहनें उस आंदोलन का नेतृत्व करती थीं और देश को आजादी दिलाने में हमारी माताओं-बहनों का उस युग में भी उतना ही योगदान था। आज भी राष्ट्र के जीवन में उनका उतना ही योगदान है। उसको आगे बढ़ाने की दिशा में हम लोगों को कर्तव्य से आगे बढ़ना चाहिए।

यह बात सही है कि 1857 से 1942, हमने देखा कि आजादी का आंदोलन अलग-अलग पड़ाव से गुजरा, उतार-चढ़ाव आए, अलग-अलग मोड़ आए, नेतृत्व नये-नये आते गए। कभी क्रांति का पक्ष ऊपर हो गया, कभी अहिंसा का पक्ष ऊपर हो गया, कभी दोनों धाराओं के बीच टकराव का भी माहौल रहा, तो कभी दोनों धारायें एक-दूसरे की पूरक भी हुईं। यह सारा 1857 से 1942 का कालखंड हम देखें, एक प्रकार से इनक्रीमेंटल था, धीरे-धीरे बढ़ रहा था, धीरे-धीरे फैल रहा था, धीरे-धीरे लोग जुड़ रहे थे। लेकिन 1942 टू 1947, वह इनक्रीमेंटल चेंज नहीं था, एक डिसरप्शन का एनवायर्नमेंट था। उसने सारे समीकरणों को खत्म करके आजादी देने के लिए अंग्रेजों को मजबूर कर दिया था, जाने के लिए मजबूर कर दिया था। 1857 से 1942, धीरे-धीरे कुछ होता रहता था, चलता रहता था, लेकिन 1942 टू 1947, वह स्थिति नहीं थी।

हम समाज, जीवन में देखें, पिछले 100-200 सालों का इतिहास देखें, तो विकास की यात्रा एक इनक्रीमेंटल रही थी। धीरे-धीरे दुनिया आगे बढ़ रही थी, धीरे-धीरे दुनिया अपने आपको बदल रही थी। लेकिन पिछले 30-40 सालों में दुनिया में अचानक बदलाव आया, जीवन में अचानक बदलाव आया और टेक्नोलॉजी ने बहुत बड़ा रोल प्ले किया। कोई कल्पना नहीं कर सकता कि इन 30-40 सालों में दुनिया में जो बदलाव आया है, व्यक्ति के जीवन में, मानव जीवन में, सोच में जो बदलाव आया है, 30-40 साल पहले हमें नजर भी नहीं आता था। हम डिसरप्शन वाला एक पॉजिटिव चेंज अनुभव करते हैं। जिस प्रकार से इनक्रीमेंटल से बाहर निकल करके एकदम से एक हाई जम्प की तरफ चले गए, मैं समझता हूं कि 2017-2022, क्विट इंडिया के 75 साल और आजादी के 75 साल के बीच के 5 साल, 1942 टू 1947 का जो मिजाज था,

वही मिजाज अगर हम दोबारा देश में पैदा करें, 2017 टू 2022 आजादी के 75 साल मनायेंगे, तब देश की आजादी के वीरों की जो कामनायें थीं, उन सपनों को पूरा करने के लिए हम अपने आपको खपायेंगे, हम अपने संकल्प को लेकर आगे चलेंगे। मुझे विश्वास है कि न सिर्फ हमारे देश का भला होगा, लेकिन जैसे 1942 टू 1947 की सफलता के कारण दुनिया के अनेक देशों को लाभ मिला, आजादी की ललक पैदा हुई, ताकत मिली, भारत को आज दुनिया के कई देश, एक भाग ऐसा है, जो भारत को उस रूप में देख रहा है। अगर हम 2017 टू 2022 जो कि हम लोगों की जिम्मेदारी का कालखंड है, अगर हम विश्व के सामने भारत को उस ऊंचाई पर लेकर जाते हैं, तो विश्व का एक बहुत बड़ा समुदाय है, जो किसी नेतृत्व की तलाश में, मदद की तलाश में है, किसी के प्रयोगों से सीखना चाहता है, भारत उस पूर्ति के लिए सामर्थ्यवान है, अगर उसको करने के लिए हम कोशिश करें, तो मैं समझता हूं कि देश की बहुत बड़ी सेवा होगी। इसलिए एक सामूहिक इच्छाशक्ति जगाना, देश को संकल्पबद्ध करना, देश के लोगों को साथ जोड़ कर चलना और इन पांच वर्षों के महत्व को हम अगर आगे बढ़ायेंगे, तो मुझे विश्वास है कि हम कुछ मुद्दों पर सहमति बना करके बहुत बड़ा काम कर सकते हैं।

हमने अभी-अभी जीएसटी देखा। यह मैं बार-बार कहता हूं, यह मेरा सिर्फ राजनीतिक स्टेटमेंट नहीं है, यह मेरा कन्विक्शन है। जीएसटी की सफलता किसी सरकार की सफलता नहीं है, जीएसटी की सफलता किसी दल की सफलता नहीं है, जीएसटी की सफलता इस सदन में बैठे हुए लोगों की इच्छाशक्ति का परिणाम है। चाहे यहां बैठे हों, चाहे वहां बैठे हों, यश सब को जाता है, राज्यों को जाता है, देश के सामान्य व्यापारी को जाता है और उसी के कारण यह सम्भव हुआ है। देश का राजनीतिक नेतृत्व अपनी प्रतिबद्धता के कारण इतना बड़ा काम कर लेता है, यह दुनिया के लिए अजूबा है। जीएसटी विश्व के लिए बहुत बड़ा अजूबा है, उसके स्केल को देखते हुए, अगर यह देश इसे कर सकता है, तो और भी सारे निर्णय यह देश मिल-बैठ करके कर सकता है। सवा सौ करोड़ देशवासियों के प्रतिनिधि के रूप में, सवा सौ करोड़ देशवासियों को साथ लेकर, 2022 को संकल्प में लेकर अगर हम चलेंगे, मुझे विश्वास है कि जो परिणाम हमें लाना है, उस परिणाम को हम लाकर रहेंगे। महात्मा गांधी ने नारा दिया था, 'करो या मरो। ' उस समय का सूत्र था, करेंगे या मरेंगे। 2017 में 2022 का भारत कैसा हो, यह संकल्प लेकर चलना है कि हम लोग, हम सब मिलकर देश से भ्रष्टाचार दूर करेंगे और करके रहेंगे। हम सभी मिलकर गरीबों को उनका अधिकार दिलाएंगे और दिलाकर रहेंगे। हम सभी मिलकर नौजवानों को स्वरोजगार के और अवसर देंगे और देकर रहेंगे। हम सभी मिलकर देश से कुपोषण की समस्या को खत्म करेंगे और करके रहेंगे। हम सभी मिलकर महिलाओं को आगे बढ़ने से रोकने वाली बेड़ियों को खत्म करेंगे और करके रहेंगे। हम सभी मिलकर देश से अशिक्षा खत्म करेंगे और करके रहेंगे, और भी कई विषय हो सकते हैं।

उस समय का मंत्र था - करेंगे या मरेंगे। हम आजाद हिन्दुस्तान में 75 साल बाद आजादी का पर्व मनाने की ओर आगे बढ़ रहे हैं तब - करेंगे और करके रहेंगे, के संकल्प को लेकर आगे बढ़ेंगे। यह संकल्प किसी दल का नहीं, यह संकल्प किसी सरकार का नहीं, यह संकल्प सवा सौ करोड़ देशवासियों, सवा सौ करोड़ देशवासियों के जनप्रतिनिधियों, सबका मिलकर संकल्प बनेगा तो मुझे विश्वास है कि संकल्प से सिद्धि के पांच साल 2017 से 2022, आजादी के 75 साल, आजादी के दिवानों का सपना पूरा करने के सामर्थ्यवान समय को हम प्रेरणा का कारण बनाएंगे। आज अगस्त क्रांति दिवस पर उन महापुरुषों का स्मरण करते हुए, उनके त्याग, तपस्या, बलिदान का स्मरण करते हुए, उस पुण्य स्मरण से आशीर्वाद मांगते हुए, हम सब मिलकर कुछ बातों पर सहमति बनाकर देश को नेतृत्व दें, देश को समस्याओं से मुक्त करें, सपने, सामर्थ्य, शक्ति और लक्ष्य की पूर्ति के लिए आगे बढ़ें।

माननीय अध्यक्ष जी, इसी अपेक्षा के साथ मैं फिर एक बार आपका आभार व्यक्त करता हूं और आजादी के दीवानों को नमन करता हूं।

श्रीमती सोनिया गांधी (रायबरेली) : स्पीकर महोदया, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करती हूं। आज हम यहां 75 साल पहले आज ही के दिन 'भारत छोड़ो आंदोलन' की यादों को ताज़ा करने के लिए एकत्रित हुए हैं। मुझे गर्व है कि मैं इस महान् सदन में खड़े होकर इंडियन नेशनल कांग्रेस के अनेक बहादुर महिला, पुरुष कार्यकर्ताओं को श्रद्धांजलि दे रही हूं, जिन्होंने इस आंदोलन में भाग लिया और हमारी आजादी के लिए बेमिसाल कुर्बानियां दीं। 8 अगस्त, 1942 को मुम्बई में महात्मा गांधी जी के आह्वान पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने जवाहर लाल नेहरू द्वारा प्रस्तावित और सरदार पटेल द्वारा समर्थक संकल्प को स्वीकार किया, जिसमें अंग्रेजी हुकूमत से देश छोड़ने को कहा गया था - 'भारत छोड़ो', 'क्विट इंडिया'। इस संकल्प के पारित होने के बाद महात्मा गांधी जी ने अपने भाषण के अंत में जो कहा, मैं उसे दोहरा रही हूं। उनके शब्दों में- मैंने कांग्रेस को प्रतिज्ञा दिलाई है कि कांग्रेस 'करे या मरे'। इन शब्दों ने पूरे देश को उत्तेजित कर दिया। अंग्रेजी सरकार ने वर्किंग कमेटी के सभी सदस्यों और अनगिनत कांग्रेस कार्यकर्ताओं को तुरंत गिरफ्तार कर लिया। हजारों लोगों को 1945 का दूसरा विश्वयुद्ध खत्म होने तक जेल में बंद रखा गया।

जवाहर लाल नेहरू ने जेल में अपना सबसे लंबा समय बिताया और कुछ कांग्रेसी कार्यकर्त्ता बीमारी की वजह से जेल से जिंदा भी बाहर नहीं आ सके। इस आंदोलन को जारी रखने के लिए देश भर में अनगिनत महिलाओं और पुरुषों को अंडरग्राउंड होना पड़ा। अंग्रेजी हुकूमत ने क्रूरतापूर्वक दमन किया और कार्यकर्त्ताओं पर गोलियां बरसायीं। हर हफ्ते दर्जनों लोग मारे गये। उनके आदेशों को नहीं मानने वालों पर कोड़े बरसाये गये। राष्ट्रवादी अखबारों पर पाबंदी लगायी गयी और उन्हें बंद भी कराया गया। सत्यग्राहियों को डराने और धमकाने की कोशिश में पुलिस द्वारा महिलाओं का उत्पीड़न किया गया। कैदियों की बर्बरतापूर्वक पिटाई की गयी या उन्हें बर्फ की सिलियों पर नंगा करके तब तक लोटने को मजबूर किया गया, जब तक कि वे बेहोश नहीं हो गये। यही नहीं, प्रदर्शनकारी नागरिकों पर हवाई फायरिंग भी की गयी, लेकिन उसके बावजूद भी प्रदर्शनकारी निडर रहे और नहीं झुके।

भारत छोड़ो आंदोलन हमारी आजादी की लड़ाई में क्रांतिकारी परिवर्तन की मिसाल बन गया, लेकिन इसके लिए हमें अनगिनत कुर्बानियां देनी पड़ीं। आज वही कुर्बानियां हमें एक मौका देती हैं, जब हम पुनः आभार के साथ उन्हें याद करें और उनके प्रति सम्मान दिखायें। आज जब हम उन शहीदों को नमन कर रहे हैं, जो स्वाधीनता संग्राम में सबसे अगली कतार में रहे, तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उस दौर में ऐसे संगठन और व्यक्ति भी थे, जिन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन का विरोध किया था। हमारे देश को आजादी दिलाने में इन तत्वों का कोई योगदान नहीं रहा। ...(व्यवधान)

महोदया, मुझे लगता है कि जब हम क्विट इंडिया की 75वीं सालगिरह मना रहे हैं, तब देशवासियों के मन में कई आशंकाएं भी हैं। यह एहसास गहरा होता जा रहा है कि क्या अंधकार की शक्तियां हमारे बीच फिर तेजी से उभर नहीं रहीं क्या जहां आजादी का माहौल था, वहां भय नहीं फैल रहा है क्या जनतंत्र की उस बुनियाद को नष्ट करने की कोशिश नहीं हो रही है, जो विचारों, स्वेच्छा, आस्था, समानता, सामाजिक न्याय की आजादी और कानून सम्मत व्यवस्था पर आधारित है

महोदया, भारत छोड़ो आंदोलन की सालगिरह का समारोह हम सबको इस बात की याद दिलाता है कि हम भारत के विचार को एक संकीर्ण मानसिकता वाले विभाजनकारी और साम्प्रदायिक सोच का कैदी न तो बनने दे सकते हैं और न ही बनने देंगे। महात्मा गांधी के नेतृत्व में हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने एक समवेशी बाहुलतावादी, लोकतांत्रिक और न्याय संगत भारत के लिए लड़ाई लड़ी। यह एक ऐसा विचार था, जिसे उन्होंने हमारे संविधान में स्थापित किया। लेकिन ऐसा लगता है कि इस सृटि पर आज नफरत और विभाजन की राजनीति के बादल छा गए हैं। ऐसा लगता है कि सेक्युलर, लोकतांत्रिक और उदारवादी मूल्य खतरे में पड़ते जा रहे हैं।

<u>12.00 hours</u>

पब्लिक स्पेस में असहमति, बहस और विचारों की विभिन्नता की गुंजाइश कम होती जा रही है। कई बार कानून के राज पर भी गैर-कानूनी शक्तियां हावी दिखाई देती हैं।

महोदया, भारत छोड़ा आन्दोलन एक यादगार है, जो हम सबको प्रेरणा देती है कि अगर हमें अपनी आजादी को सुरक्षित रखना है, तो हमें हर तरह की दमनकारी शक्तियों के खिलाफ संघर्ष करना होगा, चाहे वे कितनी भी समर्थ या सक्षम हों। हमें आज भी उस भारत के लिए लड़ना है, जिस भारत में हम विश्वास करते हैं, जो भारत हमें प्यारा है, जिस भारत में जन-जन आजाद है और उसकी आजादी निर्विवाद है। आपको बहुत-बहुत शुक्रिया, धन्यवाद। जय हिन्द।

DR. M. THAMBIDURAI (KARUR): *Hon. Madam Speaker, Vanakkam. We are celebrating the 75th anniversary of Quit India Movement. The father of our nation, Mahatma Gandhi, gave the clarion call and led the Indians asking the British to quit our country. Many leaders had sacrificed their lives for liberating our country from the clutches of the British. We call this movement as Quit India Movement.

SOME HON. MEMBERS: Madam, there is no translation.

माननीय अध्यक्ष : आपने इंटीमेशन नहीं दी थी।

DR. M. THAMBIDURAI: Madam, others are not able to get the translation. What is the situation now? If I want to speak in Tamil, I have to get permission and then you can get the translation. If you have to speak in other languages also, you have to take permission.

HON. SPEAKER: This is not permission. You have to only inform in advance.

DR. M. THAMBIDURAI: I cannot get simultaneous translation of my language. When others speak, I have to listen to that only in Hindi or English. I do not get simultaneous translation in Tamil or in other languages. Now, I am forced to speak in English.

HON. SPEAKER: If you had informed in advance, definitely you would have been provided with translation. There are Interpreters.

DR. M. THAMBIDURAI: We have to listen to speeches only in Hindi or English and not in Tamil. If somebody is speaking in Bengali, we have to listen to that only in Hindi or English. This is what I want to say.

माननीय अध्यक्ष : टेक्नोलॉजी से करेंगे।

DR. M. THAMBIDURAI: The Quit India Movement was a Civil Disobedience Movement launched by Mahatma Gandhi in the month of August 1942 during World War II demanding an end to the British rule in India. This mega movement was also known as the August Movement of India.

---

* English translation of the speech originally delivered in Tamil

After the failure of Cripps Mission, Mahatma Gandhi made a call of “Do or die” in his Quit India speech delivered in the then Bombay. Mass protests were launched across the country demanding an “orderly British withdrawal” from India and majority of the leaders fighting for independence were arrested within hours of Gandhi’s speech.

As soon as the call for Civil Disobedience was made, all the national leaders were arrested. Due to the absence of any leader outside, the masses turned violent and burnt government offices. The Army was called in and about a lakh people were arrested. The leaders had no contact with anyone from inside the jail. Civil rights, freedom of speech and freedom of the Press were abolished by the British.

The Quit India Movement was an important landmark in India’s struggle for freedom from British colonization. It instilled a new confidence among the Indian masses and aroused a spirit of total sacrifice in them. The Movement attracted participation from a large number of people including such varied professions as peasants, workers, lawyers, professors, teachers, soldiers, etc. All of them joined the Movement.

The most important effect of the Quit India Movement was that it made the British realise that in the context of the crippling effects of the Second World War on Britain’s resources and the bitter opposition to its rule India, it would be very difficult to continue ruling the Indians.

Madam, in your speech, you mentioned many incidents which took place in the Quit India Movement. At that time, Tamil Nadu also contributed a lot while participating in the Quit India Movement.

Tamil Nadu played an important role in the Indian National Movement. Even prior to the Great Revolt of 1857, the rebellion in Panchalam Kurichi, the 1801 South Indian Rebellion of Marudu Brothers and the Vellore Mutiny of 1806 were the early anti-colonial struggles in Tamil Nadu. During the nationalist era, Tamil Nadu provided leaders like G. Subramania Iyer, V.O. Chidambaram Pillai,

Subramania Bharati, C. Rajagopalachari, K. Kamaraj, Thiru Satyamurti and Thanthai Periyar to the National Movement.

You know very well that Thanthai Periyar was in the Congress in the beginning and then he had difference of opinion with Rajaji. So, he left the Congress. When he found the Dravadian Party, he fought against the British. This is history.

Our leader, Arignar Anna asked the people of Tamil Nadu to celebrate Independence Day when the British left India and handed over the Government to us on 15th August, 1947.

I want to mention an interesting thing in this august House. My leader, Puratchi Thalaivar, MGR was a staunch follower of Mahatma Gandhi. MGR joined our Party, that is, DMK, in 1953, and founded AIADMK afterwards. Before that, when he was a staunch follower of Mahatma Gandhi, he advocated Gandhian principles and wanted to wear only *khadi* clothes. At that time, his mother was against wearing *khadi*. When the marriage of MGR took place, MGR had put a condition to his mother that if at all any marriage ceremony is to take place for him, it will take place only if he wears *khadi* shirt and *khadi* dhoti. Then it happened as he wished. That is the contribution of MGR for the National Movement. So, even if the Dravadian Movement had differences with the Congress in those days, we fought for our freedom and upheld our principles to fight against the British.

Madam, I would like to mention some incidents which took place in Tamil Nadu. During the Quit India Movement, the city of Madras (now known as Chennai) was the scene of hartals, strikes, riots and all sorts of acts of violence.

Dr. B.S. Baliga describes the scene as follows: "In North Acrcot, besides hartals and demonstrations, telephone and telegraph wires were cut; post boxes were removed; the Public Works Inspection bungalow at Panapakkam and police huts at Vellore were burnt." At that time, the British imposed fines on people amounting to Rs. 6535 at that time.

It happened not only in that place but also in other places like Chengalpattu. Many students from various colleges like Madras Christian College, and Loyola College came out and launched an agitation during the Quit India Movement. This kind of incidents took place not only in Chengalpattu but also in Coimbatore and other places.

I want to make an important point. An ammunition train from Cochin consisting of two engines and 44 wagons was derailed by the saboteurs between Podanur and Singanallur railway stations. Attempts were made to derail trains at Pollachi. A village Chawadi near Karnalur was attacked and damaged and several toddy shops were burnt down at Singanallur. All sheds of the Sulur aerodrome were set on fire those days.

Besides imposing collective fines on certain villages amounting to Rs. 35,410, the Coimbatore Municipal Council was suspended for six months for supporting the Quit India Movement and for condemning the repressive policy of the Government. In Madurai, similar incidents of violence were resorted to. Madurai became the storm centre of the Movement and called for frequent interference of the military and the police.

The agitation was more or less violent in all parts of India and South India was exceptionally enthusiastic in producing the maximum effect of disconcert against the Government. Students' participation in full was the special character of this agitation.

In conclusion, I would like to make this observation. Quit India Movement, though unsuccessful in achieving its main objective in the short run, in the long run it gave that kind of momentum to get the freedom in 1947. The Indian national movement also promoted the idea of elected provincial Governments wherein some of the more important subjects were delegated to the provincial State Governments. Cooperative federalism formed the bedrock on which the national movement thrived.

Today I have seen a slogan in the newspaper given by the hon. Prime Minister. He said: “Let us pledge to work shoulder to shoulder and dedicate ourselves towards creating a new India that would make our freedom fighters proud.” That is what he said. There is also a new India pledge. In that they have said: “Let us together pledge towards a clean India. Let us go together and pledge towards a poverty-free India. Let us go together, pledge towards a corruption-free India. Let us together pledge towards a terrorism-free India. Let us together pledge towards a communalism-free India. Let us together pledge towards a casteism-free India.” It is excellent.

At the same time, I want to add two things. They are: “Let us go together and pledge to see that all our languages of this country are called national languages and not regional languages’. Let us pledge to see that all languages, including Tamil, Telugu, Bengali, etc. are recognized as official languages of this country.” It is because all our forefathers fought for freedom. They gave their lives to protect our culture, language, etc. It is the bounden duty of Parliament to protect all the languages and give equal status to all the languages instead of giving priority to one language. That is my request. Thank you very much.

PROF. SUGATA BOSE (JADAVPUR): Madam Speaker, 9th August is a red-letter day in Indian history. On this day, 75 years ago, ordinary Indians became heroes when they responded to Mahatma Gandhi's death-defying call, '*karenge ya marenge*', to make colossal sacrifices in their resolve to force the British to quit India. Our first duty today is to together pay reverent homage to the noble martyrs of the '*Bharat Chhoro Andolan*' who gave their all so that we may be born in free India.

Mahatma Gandhi had drafted his historic Quit India resolution as early as April of 1942. He indicated in interviews that he was even prepared to take the risk of violence to end the 'great calamity of slavery'. It was a somewhat toned down version of Gandhi ji's radical Quit India resolution that was eventually moved by Pandit Jawaharlal Nehru and adopted by the Congress on 8th August 1942.

As our Prime Minister, Narendra Modiji, has said, in his eloquent and stirring speech, the Quit India Movement turned out to be the biggest civilian uprising in India since the great rebellion of 1857. It was led and orchestrated by middle-ranking leaders because all the top leaders were clapped into jail in the early morning hours of 9th August, 1942. It began as an urban movement of students, youth and workers. My own father was severely wounded as he led a students' procession in the streets of Calcutta on 13th August, 1942. In late September, 1942 the uprising spread to the countryside, where huge crowds of peasants attacked all symbols of British authority, including revenue offices, post offices, police stations and so on. In some instances, arms were looted from the captured police stations. British administration collapsed in many districts of Bihar and Jharkhand, Eastern U.P. Bengal, especially in Medinipur District, Odisha and Maharashtra, especially in Satara District. Bihar and Jharkhand, which was the storm centre of the rebellion, saw strong participation by peasants and Adivasis. Everywhere, Madam Speaker, women played a crucial role in the resistance. Mantangini Hazra showed that the dignity of the Indian tricolour was more

precious to her than her own life as she was shot down in Tamluk. Parallel Governments were set up in liberated localities. But overwhelming British might ultimately prevailed by March, 1943, even though the underground leaders like Jai Prakash Narain, Ram Manohar Lohia and Aruna Asaf Ali were not apprehended until later.

Our Prime Minister, Narendra Modiji, mentioned Netaji Subhash Chandra Bose and how he had made common cause with Mahatma Gandhi in 1942. He said in a broadcast on the 17th August, 1942:

> "The whole world now sees that the velvet glove, which ordinarily hides the mailed fist of Britain, has now been cast away and brute force – naked and unashamed – rules over India. Behind the thick screen of gas, underneath the heavy blows of police batons and the continual whistle of bullets and the angry defiance of the injured and the dying – the soul of India asks – 'Where are the four freedoms?' The words float over the seven seas to all corners of the globe, but Washington does not reply. After a pause, the soul of India asks again, 'Where is the Atlantic Charter, which guaranteed to every nation its own Government?' This time Downing Street and White House reply simultaneously – 'That Charter was not meant for India.'"

Netaji had desperately wanted to be in Asia by August, 1942. But his submarine voyage from Europe to Asia could not be arranged until February, 1943. Had the armed thrust of the Azad Hind Fauj coincided with the internal rebellion of the Quit India Movement, then the history of our country might have taken an even more glorious turn.

Our Prime Minister, Narendra Modiji, has announced in his speech that the five years from 2017 to 2022 should replicate the extraordinary journey of 1942 to 1947, from *sankalp* to *siddhi.* Great events did indeed take place between 1942 and 1947, including the Quit India Movement, the armed struggle of the Azad Hind Fauj and the popular upsurge at the time of the Red Fort trial in the winter of 1945-46. But how can we forget that

there was a gap between *sankalp* and *siddhi* in 1947. We got independent India, but unfortunately we did not get united India at that time.

Nehru's famous "Tryst with Destiny" speech began with an honest confession. The pledge of freedom, he said, was being redeemed "not wholly or in full measure, but very substantially". He paid tribute to the architect of our freedom, the author of the Quit India Resolution. He said, "We have often been unworthy followers of his and have strayed from his message." Mahatma Gandhi's silence spoke louder than Nehru's eloquence. Far away from the celebrations in New Delhi, Mahatma Gandhi chose to spend Independence Day in Calcutta. The Information and Broadcasting Ministry of the Government of India had asked him for a message; and he said: "He had run dry".

The 75th Anniversary of the Quit India Movement and the 70th Anniversary of Independence, Madam Speaker, call for soul-searching introspection rather than chest-thumping celebration. It was the Mahatma's moral force, which ensured that peace reigned in Calcutta on 15th August, 1947; and Hindus and Muslims chanted "Jai Hind" in unison. Gandhiji published an article "Miracle or Accident" on 16th August, 1947; and he said: "This peace was neither miracle nor accident. It was the determination of human beings to dance to God's tune." 'We have drunk the poison of mutual hatred'. Gandhiji wrote in *Harijan* "and so this nectar of fraternisation tastes all the sweeter, and the sweetness should never wear out."

The final five and a half months of Gandhji's life constituted a message for the predicament that we face in India today. Gandhiji had a keen insight when he commented: "Irreligion masquerades as religion." Today, we see irreligion masquerading as religion. When the first AICC Session met in mid November 1947, Gandhiji had a clear message for the ruling party and the Government of the day. 'No Muslim in the Indian Union', he told them 'should feel his life unsafe.' Then, of course, he went on his final fast on 12th January, 1948 to maintain peace in this great land of ours. On 23rd January, by the way, which was Netaji Subhas Chandra Bose's Birth Day, he said: "Subhas knew no provincialism nor

communal differences" and "had in his brave army, men and women drawn from all over India without distinction and evoked affection and loyalty, which very few have been able to evoke." "In memory of that great patriot", he called upon his countrymen to "cleanse their hearts of all communal bitterness."

The 75th Anniversary of the Quit India Movement and the approaching 70th Anniversary of Freedom may be an apt occasion to ponder the relationship between the past and the future, between the old and the new.

Narendra Modiji has been talking about building a new India by 2022. We too have a dream for a new India inspired by the great leaders from the past. "Let new India arise", Swami Vivekananda had proclaimed, "arise out of the peasants' cottage, grasping the plough; out of the huts of the fishermen, the cobbler, and the sweeper." His message of equality went beyond class to encompass gender and caste as well. He said that there were two great evils in our country – trampling on the women and grinding the poor through caste restrictions. Vivekananda's vision was fundamentally one of religious harmony. That is what led him to proclaim: "We believe not only in universal toleration, but we accept all religions are true."

Vivekananda taught us to mix with all the races of the earth. "And every Hindu that goes out to travel in foreign parts," he believed, "renders more benefit to his country than hundreds of men who are bundles of superstition and selfishness." The sage held a balanced view of ancient India, which contemporary champions of India's past would do well to heed. "There were many good things in the ancient times," according to Vivekananda, "but there were bad things too. The good things are to be retained, but the India that is to be, the future India, must be much greater than ancient India."

Madam Speaker, it is not easy to be rid of bad things from the past. Today, in some parts of the country, we are witnessing a recrudescence of the hatred that had marked the cow protection movements of the 1890s, and the *shuddhi* and *sangathan* movements of the late 1920s. Rabindranath Tagore's book, *Nationalism* published exactly a hundred years ago in 1917, has a passage that

sounds like an uncanny foretelling of the social and political crisis besetting India today. "The social habit of mind", he wrote, "which impels us to make the life of our fellow beings a burden to them where they differ from us even in such a thing as their choice of food is sure to persist in our political organisation and result in creating engines of coercion to crush every rational difference which is the sign of life."

I appeal to the Prime Minister to stop the engines of coercion in their tracks. Faith in India's destiny rescues us from debilitating pessimism in the face of ferocious assaults on the expression of rational difference. The song composed by Rabindranath that we have adopted as our National Anthem offers thanks to *"Bharata Bhagya Bidhata"* for the divine benediction showered so generously on our country and our people. The poet's lyrics sang a paean to the expression of this divine glory that had many attributes – the *"Janaganamangaldayak"*, the Giver of grace, was at the same time, in the later verses of the song, the *"Janagana-aikya-bidhayak"* – the One who crafted unity out of India's myriad religious and regional diversity. The "*Janaganadukhatrayak"* appears in feminine form.

"Ghor timir ghana nibir nishithe peerita murchhita deshe
Jagrata chhilo taba abichala mangala nata nayane animeshe
Duhswapne atanke raksha korile anke
Snehamayee tumi Mata"

The maker of India's destiny gives solace in the darkest of times and offers hope that the terror of the current nightmare will pass.

"The appointed day has come," Nehru said of the tryst, "the day appointed by destiny". Was 15th August, 1947 the day appointed by destiny? Viceroy Mountbatten chose the day randomly as he tried to quit India with the least possible harm to British interests. Yet, exactly two years before Independence on 15th August, 1945, Netaji Subhas Chandra Bose had issued a poignant last Order of the Day to those who fought under his leadership for India's freedom: "Never

for a moment falter in your faith in India's destiny. India shall be free and before long."

Today, we need to rekindle the spirit of our great freedom struggle. Narendra Modi ji says that the next five years will be transformative. We sometimes wonder when he says that these years will be transformative because the three top Constitutional posts are held by people belonging to the same ideology, we cannot but expresses some concern. We need to be clear about what our *sankalp* is for 2022. If he truly wants all evils to quit India by 2022, including communalism, in the pejorative sense of that word, we hope that he will unambiguously condemn and take stronger action against those who are spreading the poison of hatred and killing human beings in the name of religion.

In conclusion, Madam Speaker, a galaxy of great leaders including Mahatma Gandhi, Netaji Subhas Chandra Bose and Pandit Jawaharlal Nehru led the people of India on their brave journey towards freedom. After Independence, sometimes we have had to ask and say: *"Manzil unko mile jo sharik-e-safar na the."* That is why, today, we have to make sure that we do not have a vision of untrammelled dominance of one community and one language. I agree with Dr. Thambidurai that we must counter-pose an alternative and a better vision of a new India based on the cultural intimacy of all India's different communities. A part of the battle for the soul of India will be fought in the realm of ideas not in the trenches of party politics. So, let us have a healthy democratic contest during the next five years. I know that those who are occupying the treasury benches today have their own *gurujies*. But for the next five years, I would invite them to join us on a journey on the broad highway illuminated by the halo of Mahatma Gandhi.

Let us banish poverty, illiteracy and disease from this great land of ours. Our new India will be the most vibrant economy in the world with its inhabitants enjoying universal access to education and health care. Our new India will be home to some of the greatest institutions of learning attracting the finest faculty and students from all over the world. An overarching sense of Indian nationhood

will happily coexist with multiple identities of our diverse populace. We will celebrate and respect our differences to rise above them.

To move from that resolution to accomplishment, from that *sankalp* to *siddhi*, we need peace. To ensure peace, we must avoid all temptations to be chauvinistic and jingoistic. To build a truly great new India by the 75th anniversary of our Independence, we must have a grand vision inspired by a broad, generous and imaginative conception of India's place in the world and our contributions to the cause of humanity. It is time for us, as democratically elected representatives of the people of India, to not just affirm today's resolution that you, Madam Speaker, are placing before us, but also to renew the famous midnight pledge "…to India, our much-loved motherland, the ancient, the eternal and the ever-new, we pay our reverent homage and we bind ourselves afresh to her service. Jai Hind. Jai Hind."

माननीय अध्यक्ष : मुझे ऐसा लगता है कि हमने प्रत्येक पार्टी के व्यक्ति को बोलने के लिए कहा था, लेकिन जो छोटी पार्टियां हैं, उनसे मेरी रिक्वेस्ट है कि उनके प्रमुख अपना भाषण ले कर दें, केवल लीडर्स ऑफ द पार्टी के लिए बोल रही हूं, छोटी-छोटी पार्टियों को, सभी को समय मिलेगा। यदि वे अपना वक्तव्य टेबल करें, तो ज्यादा सुविधाजनक रहेगा। जिससे हम एक बजे अपना संकल्प पूरा कर सकेंगे।

श्री आनंदराव अडसुल (अमरावती): अध्यक्ष महोदया जी, बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है। 'अगस्त क्रांति दिन' जिसका 75वां वर्ष हम सम्मान के साथ मनाने जा रहे हैं। यह एक अमृत महोत्सव का भी दिन है। आपने इस चर्चा की शुरूआत की, यह भी एक विशिष्टता है। आपने पूरे देश को एक संदेश दिया। भारत छोड़ो के साथ-साथ अभी भारत जुड़ने के दिन आए हैं, यह आपके अपने वक्तव्य में आया। आदरणीय प्रधान मंत्री जी ने भी अपना वक्तव्य दिया। वह तो पूरे देश और दुनिया में एक अच्छे वक्ता के रूप में सामने आए हैं। आदरणीय सोनिया गांधी जी का वक्तव्य भी मैंने सुना। वह भी बहुत अच्छा वक्तव्य था, अच्छी हिंदी में था। उन्होंने इंडियन नेशनल कांग्रेस के ऊपर जोर दिया। मैं समझ सकता हूं कि इस स्वातंत्र्य संग्राम के दिन, वर्ष 1885 की बात है, दादा भाई नौरोजी की अध्यक्षता में कांग्रेस की स्थापना हुई। उस समय दूसरे पक्ष आगे नहीं आए थे तो ज्यादा जोर देने की बात मैं समझ सकता हूं।

आज एक बात ध्यान में लेना जरूरी है कि महाराष्ट्र की राजधानी मुम्बई, आपने भी महाराष्ट्र के ऊपर ज्यादा जोर दिया इसलिए मैं आपका आभारी हूं। जहां ग्रांड रोड के बाजू में ग्वालिया टैंक है और वह हमारे सावंत जी के चुनाव क्षेत्र में है। 9 अगस्त, 1942 वही दिन था। इसके साथ ही एक बात मैं जोड़ना चाहता हूं। हमारे श्रद्धेय नेता हिंदू हृदय सम्राट माननीय शिव शेना प्रमुख बाला साहब ठाकरे ने एक संदेश दिया है कि हम सार्वजनिक जीवन में काम करें या राजनैतिक जीवन में काम करें। साम, दाम, दण्ड, भेद नीति का अमल करेंगे। हम इसमें यही बात जोड़ना चाहते हैं। गांधी जी ने अनशन का प्रयोग किया, सत्याग्रह का प्रयोग किया। बाकी स्वतंत्रता सेनानी अपने-अपने तरीके से अलग-अलग लड़ाई लड़ रहे थे। लेकिन जब गाधी जी को लगा कि अनशन और सत्याग्रह से यह काम नहीं होने वाला है तो उन्होंने 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' 'क्विट इंडिया' का नारा दिया। वह 9 अगस्त, 1942 का दिन था, आज वही दिन है। स्वतंत्रता की लड़ाई में तीन नाम प्रमुख रूप से आगे आए। उसमें गांधी तो थे ही, साथ में लाल, बाल और पाल भी थे। लाला लाजपतराय, पंजाब से आते थे, विपिन चंद्र पाल, बंगाल से आते थे और बाल गंगाधर तिलक, महाराष्ट्र से आते थे। ये अपने-अपने तरीके से लड़ाई लड़ रहे थे। दूसरी तरफ सुभाष चंद्र बोस अलग ढंग से लड़ाई लड़ रहे थे। आपने एक बात यहां बताई कि ऐसे बहुत छोटे-छोटे लोग भी थे, जिनके नाम सामने नहीं आए। लेकिन आपने बाबू गेनू का नाम लिया। नाना पाटील, जिन्हें क्रांति सिंह बोलते हैं, वह सतारा से थे। उनको प्रतिसरकार भी बोलते थे और पत्रीसरकार भी बोलते थे। अगर कोई स्वतंत्रता के मूवमैन्ट में काम करता है, वह कहां हैं, क्या कर रहा है, इसके बारे में अगर कोई जानकारी अंग्रेजों को देता था और ऐसे लोगों को जब पकड़ते थे तो उनके पांव में घोड़े का नाल ठोक देते थे, इसलिए वह पत्रीसरकार कहलाते थे। इसके अलावा अपने तरीके से अपनी सरकार चलाने का उनका विचार था, इसलिए वह प्रतिसरकार कहलाते थे, ऐसे लोग भी थे। हमारे यहां किशनवीर थे, चव्हाण जी थे, ऐसे बहुत से लोग थे।

मैं इसका उल्लेख इसलिए कर रहा हूं, क्योंकि मैं अपना चुनाव विदर्भ से लड़ता हूं। मैं सतारा, वैस्टर्न महाराष्ट्र से आता हूं। मैं आपको एक बात बताना चाहता हूं कि 1857 में स्वतंत्रता की पहली लड़ाई हुई, जिसे स्वतंत्रता संग्राम बोला जाता है। इसमें तात्या टोपे, नाना फड़नवीस और श्री एम.शिंदे थे। यह सही मायने में सतारा के थे, इनका नाम शिंदे था। हमारे ज्योतिरादित्य सिंधिया क्यों बोलते हैं, मुझे पता नहीं, वह सही मायने में वहां के हैं. वह उनके वारिस हैं। एक महत्वपूर्ण नाम, जो इस लड़ाई में शामिल थी - झांसी की रानी लक्ष्मीबाई। उनके बारे में बोला जाता है - 'ढाल छातीशी, पुत्र पाठीशी, कमरेला तलवार, एक अछूती नार झांशीची रानी लक्ष्मीबाई, एक अछूती नार।' ऐसे भी लोग हैं, जिन्हें हम भूल जाते हैं। इतिहास में पढ़ा था, जब इतिहास के प्रश्न आए तो हमने उनके उत्तर दिये। स्वतंत्रता की लड़ाई 1857 में शुरू हुई थी, हालांकि कामयाब नहीं हुई थी। लेकिन स्वतंत्रता के लिए उन्होंने बलिदान दिया है, यह भी हम नहीं भूल सकते हैं। लड़ाई के और भी तरीके होते हैं। गांधी जी हमेशा बोलते थे कि अहिंसा से हमें लड़ाई जीतनी है। उन्होंने अपने तरीके से लड़ाई लड़ी। इसलिए हम उन्हें महात्मा की पदवी देते हैं और आदर के साथ बोलते हैं। लेकिन साथ ही हम यह भी नहीं भूल सकते हैं कि सुभाष चंद्र बोस ने एक अलग तरह की आमने-सामने की लड़ाई का इरादा रखा था, ऐसे लोग भी थे।

तिलक जी ने जो दो पेपर चलाए थे एक था "दि मराठा " नाम से और दूसरा "केसरी " नाम से था, आपने मराठा का उल्लेख नहीं किया। खाली यही नहीं किया। यह स्वतंत्रता का विचार सभी के मन में आना चाहिए, सब लोग इकट्ठे होने चाहिए, मूवमेंट में सभी शामिल होने चाहिए, इसलिए शिव जयंती और गणेश उत्सव मनाने की शुरूआत उन्होंने की थी। जो भी लोकल सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं, उन माध्यमों से स्वतंत्रता का विचार देने का एक काम किया था। जो कभी अंग्रेजों के ध्यान में नहीं आया कि ये क्या कर रहे हैं, अपनी भाषा में क्या कर रहे हैं, वे नाच रहे हैं, गाना गा रहे हैं, लेकिन स्वतंत्रता के प्रति एक लड़ाई लड़ रहे हैं। यह भी किसी को पता नहीं है। अलग-अलग ढंग से लड़ाई लड़ी गई। हमने स्वतंत्रता पाई है, आजादी के 70 साल पूरे हुए हैं। इसमें अभी जो भी बदलाव आए हैं, ये बदलाव हम देख रहे हैं। आपने एक बात बताई कि भारत जोड़ो। जोर से काम चालू है। बिहार साथ में आया है, त्रिपुरा साथ में आया है, तमिलनाडु आने के रास्ते पर है, गोवा तो हाथ में है, तो भारत जोड़ो का मतलब यह होना चाहिए कि एक नेता, एक देश - एक विचार, एक देश और विचार यह होना चाहिए कि सभी का उसमें भला हो।

एक बात यहां मैं बताना चाहता हूँ कि आरक्षण के नाम पर हरियाणा में जाटों का आंदोलन हुआ, लेकिन वह हिंसात्मक हुआ। दूसरा आंदोलन गुजरात में पटेलों का हुआ, उसमें भी थोड़ा हिंसा हुई। लेकिन एक आंदोलन महाराष्ट्र में पिछले एक साल से चल रहा है। वह मराठा क्रांति मोर्चा के नाम से चल रहा है। यह बताना इसलिए जरूरी है कि महाराष्ट्र की भूमि की यह एक अलग उल्लेखनीय बात है। हर जिले में मोर्चे निकाले गए, दो लाख, तीन लाख, चार लाख लोगों के साथ में, कभी सामने कोई नेता नहीं आया कि

इनका नेता कौन है? वे जब मोर्चा का दिन तय करते थे कि इस दिन 11 बजे मोर्चा शुरू होगा और जिलाधिकारी के कार्यालय में दो बजे पहुंचेंगे। इतनी डिसिप्लेन दिखाई देती थी, कोई घोषणाएं नहीं होती थीं, जिलाधिकारी के कार्यालय में जब जाते थे, तब दो बच्चियों के द्वारा जिलाधिकारी को एक निवेदन देते थे और मोर्चा खत्म हो जाता था। यह एक आदर्श लेने जैसी बात है। इसलिए उन्होंने अपने मोर्चा को क्रांति मोर्चा नाम दिया है। कम से कम 25-30 लाख लोग महाराष्ट्र से वहां आते हैं। एक आंदोलन की दिशा होती है, तरीका होता है। हिंसात्मक तरीके से हमें कुछ चाहिए, वह मिलता है, ऐसा नहीं है, लेकिन इस तरीके से भी मिलता है। उनकी आरक्षण को लेकर सात मांगे हैं। जो कर्ज माफी हुई है, वह सही तरीके से नहीं हुई है, उसे दुरुस्त करना चाहिए, वह भी उनकी मांग है। इसलिए वे एक निवेदन दे कर अपनी बात बता कर, अपना मोर्चा खत्म करना चाहते हैं। शायद यह आखिरी मोर्चा है। आज ऐसी कुछ बाते हैं। आपने मुझे बहुत कम समय देने का एलान किया है, लेकिन आप महाराष्ट्र से आती हैं, मैं भी महाराष्ट्र से आता हूँ तो थोड़ा एक-दो मिनट का समय और भी मैं चाहता हूँ। यह आधार तो लेना ही चाहिए। आधार तो हरेक के लिए होता है। आज देश में जो भी चल रहा है, मैं तो हमेशा सराहना करता आया हूँ।

माननीय अध्यक्ष : आज मैं स्वयं संयम पर चल रही हूँ।

श्री आनंदराव अडसुल: महोदया, बिल्कुल ठीक है। मैंने जैसा बताया, एक नेता, एक विचार, एक देश में होना चाहिए। हम आगे चल रहे हैं, अच्छे-अच्छे काम भी हो रहे हैं, अच्छी-अच्छी नई-नई योजनाएँ आ रही हैं, मैं हर एक का उल्लेख नहीं करूँगा, लेकिन पूर्व इतिहास सामने रखकर उसकी पुनरावृत्ति नहीं होनी चाहिए।

ऐसा बोला जाता है कि history repeats itself. अगर वह अच्छी तरीके से रिपीट हो जाये, तो हम सभी लोग चाहते हैं, सभी को हम विश्वास में लें। प्रयास तो हो रहा है, लेकिन आज के दिन में एक ऐसा कल्चर बना है कि हम जब भी कभी विपक्ष में बैठते हों, तो चाहे अच्छी बात हो या बुरी बात हो, हमें हमेशा विरोध ही करना चाहिए। यह कल्चर हमें कभी न कभी खत्म करना चाहिए। अगर विपक्ष के लोग कोई अच्छी बात बोलते हैं, तो उसकी सराहना करनी चाहिए। यह बात भी हमें ध्यान में रखनी चाहिए। अल्टिमेटली हमारा गोल यह है कि यह देश हम सभी का है और यह इस देश की विशेषता है कि यहाँ विविधता में एकता है।

मैं आखिरी बात यही बोलना चाहता हूँ कि हम जन्मदिन या पुण्य तिथि किसकी मनाते हैं, जिन्होंने अपने जीवन में कोई अच्छा काम किया है, उनका आदर्श अपनी आने वाली पीढ़ी के सामने रखने के लिए हम उनका जन्मदिन या पुण्य तिथि मनाते हैं। वही यह बात है कि चाहे यह 9 अगस्त क्रान्ति दिन हो, 15 अगस्त 1947 को हमारा स्वतंत्रता दिन हो या 26 जनवरी 1950 हमारा प्रजा सत्ता दिन हो, इन्हें हम

इसलिए मनाते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ी इससे कोई आदर्श ले, एक ऊर्जा ले और आगे चले। इसी मकसद से यदि हम भविष्य में चलेंगे तो जरूर, यह एक अच्छा देश है ही, हमारे सामने चुनौती है, डोकलाम में संघर्ष किसी भी समय हो सकता है, इसलिए सभी को इकट्ठा रहकर एक विचार से उसका मुकाबला करना हमारा परम कर्तव्य है। धन्यवाद-जय हिन्द।

SHRI THOTA NARASIMHAM (KAKINADA): Thanks you very much for giving me this opportunity to speak on Sankalp Parva. Indeed, it is a great privilege for me to be a part of this Parva. The month of August is the month of Revolution and the nation will be celebrating August 15th as Independence Day as Sankalp Parva or Day of Resolve. We have to take pledge to quit and clear off maladies of un-cleanliness, poverty, terrorism, casteism and communalism from India. This year we are celebrating the 75th anniversary of Quit India Movement.

From our State of Andhra Pradesh, many freedom fighters participated in the Quit India Movement along with Mahatma Gandhi.

This five-year period from 2017 to 2022 will ignite and kindle the transformation that will create an India, which our freedom fighters have always aspired for. During his *Mann Ki Baat* programme, our honourable and dynamic Prime Minister has said: “In this month of August; the month of the Quit India Movement, let us come together and resolve Dirt-Quit India, Poverty-Quit India, Corruption-Quit India, Terrorism-Quit India, Casteism-Quit India and communalism-Quit India.”

Going back to our glorious history, as I previously mentioned, the month of August is the month of revolution. The Quit India Movement began on August 9th, 1942 and India attained Independence on August 15th, 1947. The five years from 1942 to 1947 were decisive for country's Independence. Likewise, these five years from 2017 to 2022 must play a decisive role for our future.

Here, I want to mention about our Father of the Nation, Mahatma Gandhi, who proclaimed that “Let every Indian consider himself to be a free man.” Gandhi Ji's *mantra* of ‘Do or Die’ in the Quit India Movement had reaped great results along with the time tested weapons of Satyagraha and Non-Violence against the British. Under the leadership of Mahatma Gandhi, people across India – from every village and city, transcending all barriers – became united and came together with a common mission to uproot imperialism and to fight for a common social cause to share their ideas to make a new India.

Terming Quit India Movement as an important milestone and inspiration, we the people of India, have to take a pledge to create a new India that is stronger, prosperous, corruption free and poverty free *Bharat*. In this spirit, I request one and all thorough this august House to make this 'Sankalp Parva', a great success.

Let us also encourage others to do the same. From the bottom of my heart, I too will take the pledge to be a part of this movement. Thank you.

SHRI A.P. JITHENDER REDDY (MAHABUBNAGAR): Madam Speaker, I thank you for giving me this opportunity to speak today.

The roots of Quit India Movement were planted exactly 75 years ago on 8th August, 1942 by Mahatma Gandhiji at the Bombay Session of All India Congress Committee.

The spirit showcased during the Quit India Movement is relevant even in today's times when it comes to social evils which have plagued our society. Our Prime Minister recently invoked the Quit India Movement during his 'Mann ki Baat' programme and asked citizens to show the same spirit, which was showed back then to expel the British from our nation, this time in order to expel the evil forces of communalism, casteism, corruption, terrorism, poverty and dirt from the country by 2022.

Madam, just like what Mahatma Gandhi said during his speech then that we need an orderly withdrawal of the British from India, today we require an orderly withdrawal of these social evils from the country. The Gandhian values are more than just relevant today and a movement parallel to that of Quit India Movement, on the lines of Gandhian ideology, will bring harmony and unity amongst the people.

Madam, during the Prime Minister's speech, he talked about corruption as one of the evils which needs a withdrawal from the country. Here, I would just like to say that the corruption has to be taken out. आज तक भी यही बात हो रही है। अंग्रेज़ तो चले गए लेकिन यहाँ पर औलाद छोड़ गए। यहाँ पर सेम ड्रैकोनियन टैक्स चल रहा है, कॉलोनियल लीगेसी चल रही है, सिविल सर्विसेज़ ब्यूरोक्रेसी का जो चल रहा है, जो उस दिन था, वही आज भी है। Here, perhaps is our chance to have a re-look at and revamp the All India Services, a colonial legacy, which along with a notoriously aggressive taxation system, another colonial practice which has continued and has stayed the course throughout independent India.

The Indian bureaucracy has since the very early inception been infamous for its complexity of structure, inefficiency in the past and being prone to grave

corruption. A Hong Kong based think-tank came out with a report in 2012 which rated the Indian bureaucracy as the worst in Asia. Here, I would like to acknowledge the steps taken by this present Government to bring in efficiency in the bureaucracy. In the past few months, we have seen the IAS and the IPS officers being handed out compulsory retirement on the grounds of their ill-performances. Last year, the Ministry of Finance took a similar action against a few erring IRS officers also. However, the aggravated problem warrants a far greater reform.

In 2012, the Ministry of Personnel, Public Grievances and Pension prepared a background paper to lay the theme for discussion on the Civil Services Day in 2012 in which it mentioned that corruption in the Civil Services has become all pervasive and has become a norm. It has become a total practice now. One of the major factors leading to this corruption is the permanency of All India Service Cadre Officers in one State throughout their career. Permanency is the breeding ground for this corruption. We need to reform this system of keeping the IAS and IPS in one State throughout their career since we already have State cadre officers for serving in the State. So, this type of administrative reforms has to be brought in; electoral reforms have to be brought in; and financial reforms have to be brought in.

Gandhiji's calling in 1942 invoked an unprecedented response from the Indians and it took us five years since this calling to drive the British out of this country. There is absolutely no reason why the same cannot be repeated with such social evils, which are deep-rooted in today's society. All that is required is the same unequivocal support and a genuine spirit to bring out a change.

This is the time to take a *Sankalp* today to free the country from the clutches of corruption, intolerance, lynching, harassment of common man at the hands of the powerful, safety of girls and work towards attainment of this *Sankalp* by 2022. Let us pledge to create a new India in the coming five years -- an India

that the Members of the Constituent Assembly envisaged and an India, which the freedom fighters, who sacrificed their life for the struggle, would be proud of.

As we talk of sacrifice, Mahatma Gandhi, Netaji Subhash Chandra Bose, Shri Bhagat Singh, etc. are all people who have struggled and they were *yodhas* even before we were born. So, it is history for us, but today, we have also seen in Telangana when the *andolan* was going on there where people like Shri Jayashankar, Shri Srikant Chary, Ms. Suvarna, Shri K. Venugopala Reddy, Shri Rajasekhara Reddy and Shri Yadgiri and all these people took part in the *andolan* and they have sacrificed their life seeking the formation of new Telangana.

Even KCR's slogan was either 'हम तेलंगाना हासिल करें या मरें।' This was also a slogan, which he had given and we have achieved it. Today, after achieving it, we have not left the State just like that. Today, we are rebuilding our Telangana properly so that the Telangana people who have been deprived for the last 60 years get back really what they want. Today, we are an example in the country. So, I would request that even our country today should be built in a proper and good manner. Thank you, Madam.

*__श्रीमती रमा देवी (शिवहर):__ 9 अगस्त, 2017 को हम भारत छोडो आन्दोलन के 75 साल पूरे कर रहे है। 75 साल पहले भारत छोडो आन्दोलन की गाथा आज भी इतिहास के पन्नो में वर्णित है और स्वतंत्र भारत बनाने के लिए जिन शहीदो ने कुर्बानी दी और कई प्रकार की यातनाएं सहनी पड़ी उसका युवा वर्ग पर विशेष प्रभाव पड़ता है। देश की आजादी के लिए मुख्य रूप से दो आन्दोलन मुख्य है पहला 1857 का स्वतंत्रता संग्राम एवं दूसरा 1942 का भारत छोडो आन्दोलन। 1942 का आन्दोलन इतना शक्तिशाली था जिसके पाँच साल बाद अंग्रेज भारत छोड़ने के लिए मजबूर हो गये और अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ।

भारत छोडो आन्दोलन के दौरान देश में 942 लोग मारे गये, 1630 लोग बुरी तरह से घायल हुये, 18 हजार के करीब डी आई एस में बन्द हुये, और 60229 लोग गिरफ्तार हुए और आदरणीय सुभाष चन्द्र बोस भी 1942 को जापान की सेना के साथ भारत की तरफ बढ़े। देश में कई स्थान भारत छोडो आन्दोलन में पूरी तरफ से सक्रिय रहे है, बिहार का गया, भागलपुर, पूर्णिया एवं चम्पारण स्थानों पर भारत छोडो आन्दोलन उग्र रूप ले चुका था। बलिया में चित्तु पान्डेय के नेतृत्व में अंग्रेजों के खिलाफ जेहाद ने अंग्रेजो को झकझोर कर रख दिया। आन्दोलन को दबाने के लिए चित्तू पान्डेय को फांसी की सजा दी गई। इस भारत छाडो आन्दोलन में पूज्य महात्मा गांधी जी के साथ अरूणा आसफ अली,राम मनोहर लोहिया, सुचेता कृपलानी, छोटू भाई पुराणिक, जयप्रकाश नारायण, राजेन्द्र प्रसाद, बीजू पटनायक, सुभाष चन्द्र बोस जी, कर्पूरी ठाकुर ने भारत छोडो आन्दोलन को चलाने में जो योगदान दिया भारत सदैव उनका अभारी रहेगा।

मैं बिहार के शिवहर जिले से आती हूँ जहाँ पर तरियानी छपरा स्थान पर महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में भारत छोडो आंदोलन शुरू हुआ जिसको शहीदों की याद में एक स्मारक स्थल बनना चाहिए। मेरे तरियानी छपरा ग्राम में ग्यारह लोग शहीद हुए थे जिस स्थान पर लोग शहीद हुए थे, खेद के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि वहाँ पर अभी तक कोई स्मारक स्थल नहीं बना है जिससे शहीदों के प्रति सम्मान दिया जाए। मेरी भारत सरकार से माँग है कि शहीदों के प्रति आदर और सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए, परिवार को आदर व्यक्त करे।

मैं भारत छोडो आंदोलन के शहीदों एवं इसका संचालन करने वाले नेताओं के प्रति अपने संसदीय क्षेत्र की ओर से आभार व्यक्त करती हूँ। मेरा भारत सरकार से यह भी अनुरोध है कि जिस तरह से भारत छोड़ो आंदोलन के सफल आयोजन से हमने अंग्रेजों को भारत से भगाया है उसी तरह से अंग्रेजी भाषा को सरकारी कार्यालय से, न्यायालय के काम काज से अलविदा करवाना चाहिए।

---

* Speech was laid on the Table

*SHRI PREM DAS RAI (SIKKIM): On this day, August Kranti Diwas, I rise to support the Resolution brought into the House by the Hon'ble Prime Minister, Narendra Modi ji. The Sikkim Democratic Front Party and our dear leader Pawan Chamlinng ji, salute the freedom fighter and especially those from the Gorkha Community. Many gave their lives in the Indian National Army raised by Late Subhas Chandra Bose. In this Parliament premises stands the statue of major Durga Malla who was the first Indian Gorkha who sacrificed his life in the Indian National Army. We salute him and all the other Indians who gave their all, so that we could have our own freedom and Independence which, sometimes I feel, we take for granted.

On this day therefore, let peace be found in the troubled region of ours. As long as Darjeeling boils, Sikkim cannot progress.

Even though Sikkim joined the Indian Union in 1975 we have always joined hands and minds to be Indian. No less.

We pledge, along with our Prime Minister, that we will whole heartedly work from 'Sankalp se siddhi' and make a new India by 2022.

* Speech was laid on the Table

[*] **श्री कौशलेन्द्र कुमार (नालंदा):** आज से 75 वर्ष पहले 9 अगस्त, 1942 का ''भारत छोडो आंदोलन'' देश की आजादी का दूसरा पड़ाव माना जाता है। प्रथम 1857 ईसवीं का स्वतंत्रता संग्राम और द्वितीय 1942 ईसवीं का भारत छोडो आंदोलन। लम्बी अंग्रेजी हुकूमत के विरूद्ध कई ऐतिहासिक आंदोलन हुए। हमारे पूर्वजों ने बहुत प्रताड़नाएं और कष्ट सहे। हजारों लोगों की कुर्बानियों के बाद ही हमें आज स्वतंत्र भारत में रहने का अवसर मिला। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भारत छोडो आंदोलन या अगस्त क्रांति, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की अंतिम लड़ाई थी। इस आंदोलन के द्वारा ब्रिटिश हुकूमत की नींव को हिलाकर रख दिया गया था। महात्मा गाधी जी के नेतृत्व में यह आंदोलन डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी, अच्यूत पटवर्धनजी, अरूणा आसफ अली जी, पंडित जवाहर लाल नेहरू जी, राम मनोहर लोहिया जी, सुचेता कृपलानी जी छोटू भाई पुराणिक जी, जयप्रकाश नारायण जी जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों की बागडोर ने इस आंदोलन को एक ढाँचागत स्वरूप प्रदान कर लाखों युवाओं को ब्रिटिश हुकूमत के विरूद्ध खड़ा कर दिया। महात्मा गांधी जी की यह तीसरी लड़ाई थी, जो क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद उनहोंने ''अंग्रेजों भारत छोडो'' का नारा दिया और पूरे देश में एक साथ 9 अगस्त को आंदोलन छेड़ दिया। यह दिन इसलिए भी चुना गया था कि हर वर्ष ''काकोरी-काण्ड'' की याद ताजा रखने के लिए युवाओं द्वारा ''काकोरी-काण्ड'' स्मृति-दिवस मनाने की परम्परा भगत सिंह जी ने प्रारम्भ कर दी थी और उस दिन से हर वर्ष बहुत बड़ी संख्या में नौजवान एकत्र होते थे। सुभाष चन्द्र बोस जी के ''आजाद हिन्द फौज'' भी आजादी के लिए आंदोलन और संघर्ष कर रही थी ।

अतः गांधी जी ने एक रणनीति के तहत यह दिन चुना था। ब्रिटिश सरकार को करीब 6 हफ्ते लगे इस आंदोलन को दबाने में। वैसे ही द्वितीय विश्व युद्ध में परेशान ब्रिटिश हुकूमत ने इस आंदोलन के आगे घुटने टेक दिए। उत्तर व मध्य बिहार के 80 प्रतिशत स्थानों पर जनता का राज हो गया। छात्रों, मजदूरों एवं किसानों ने मिलकर वैकल्पिक सरकार बनाई। 1939 के दूसरे विश्वयुद्ध के कारण वस्तुओं के दामों में बेतहाशा वृद्धि हुई थी, जिसके कारण जनता में काफी रोष व्याप्त था और महात्मा गांधी जी के ''करो या मरो'' के नारे ने लोगों को एक नई ऊर्जा के साथ आंदोलन में कूद पड़ने की प्रेरणा दी। लाल बहादुर शास्त्री जी के नारे ''मरो नहीं-मारो'' ने आग में घी का काम किया और आंदोलन सही मायने में एक जन-आंदोलन बन गया। अन्ततः 15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हुआ। हम सभी भारतवासी अपने पूर्वजों के ऋणी हैं।

मैं एक विषय रखना चाहता हूँ। गांधी जी का एक सपना था कि देश शराब से मुक्ति पाए। हमारे नेता माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी का इस ओर एक सार्थक प्रयास रहा है और उन्होंने बिहार जैसे अति पिछड़े और बड़ी आबादी वाले राज्य को नशा-मुक्ति प्रदेश बिहार बनाने का कार्य किया है। माननीय प्रधानमंत्री जी का गृह राज्य गुजरात भी शराब-मुक्त प्रदेश है। अतः सरकार क्यों नहीं शराब मुक्त

---

[*] Speech was laid on the Table.

देश की घोषणा करती है। इस तरह हम देश को क्राईम-मुक्त बनाने की दिशा में आगे बढ़ेंगे क्योंकि शराब के कारण ही क्राइम में दिनोंदिन इजाफ़ा हो रहा है। शराब-मुक्त प्रदेश होने से गरीबी से छुटकारा मिलेगा। हमारी माताओं, बहनों पर अत्याचार और जुल्म नहीं होगा। हमारे पूर्वजों के सपनों का देश तरक्की के मार्ग पर आगे बढ़ेगा। बहुत-बहुत धन्यवाद।

*SHRI VIJAY KUMAR HANSDAK (RAJMAHAL): I would like to make my humble submission on the topic that whenever there is a discussion about our country's freedom history, it is retraced to the uprise in 1857. But prior to 1857 in the year 1855 then Santhal Hul under Sidhu Murmu and Kanhu Murmu was the first uprise against the Britishers and is not prominently spoken or written in the Indian Independence history which needs to be known and spoken at all India level.

And again I hope our great India remains united, and proceed and progress as everyone dreams. We, representing our country, can work together to provide and fulfil the needs of our people to make our country and realize the dreams of our martyrs, who happily laid down their life, for our happy and prosperous future.

* Speech was laid on the Table.

*[*] **श्री अजय मिश्रा टेनी (खीरी) :**मैं भारत छोड़ो आंदोलन के 75 वर्ष पूरा होने पर सभी स्वतंत्रता संग्राम के वीरों को श्रद्धांजलि देते हुऐ अपने जिले के श्री राजनाराण मिश्र, जिनको इस आंदोलन में लखनऊ जेल में फांसी दी गयी थी । यह न केवल इस आंदोलन में हुयी एकमात्र फाँसी थी बल्कि भारत के 90 वर्ष के स्वतंत्रता संग्राम (1857-1947) की अंतिम फाँसी थी मेरे जिले के ही दूसरे स्वतंत्रता संगाम सेनानी पं0 बंशीधर शुक्ला का भी बड़ा योगदान अपने गीतों उठ जाग मुसाफिर..... कदम से कदम मिलाये जाए.... ऐसे कई गीतों द्वारा जिन्हें महात्मा गाँधी जी की सभा व सुभाष बोस जी की आजाद हिन्द फौज के सेना गीत के रूप में गाया जाता था । मैं अपने जिले के साथ सभी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए प्रधानमंत्री जी द्वारा सुझाये गये लक्ष्य को संज्ञान लेकर सभी से अनुरोध करता हूं कि 2017 से 2022 तक हम सब मिलकर महात्मा गांधी के सपनो का भारत व पं0 दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय के संकल्प के साथ भारत का निर्माण करें ।

[*] Speech was laid on the Table.

*SHRI N.K. PREMACHANDRAN (KOLLAM):Quit India Movement or Revolt of 1942 or August Revolution was the most powerful and mass movement in the freedom struggle led by Gandhiji.

In the Working Committee Meeting held in Wardha in 1942, Congress first accepted the idea of a struggle.

AICC met in Bombay in August 7 & 8 ratified to got to struggle, as Quit India Movement.

Second World War broke out in the year 1939 and by the middle of 1942 Japanese troops were approaching the border of India.

Pressure was mounting on Britain from China and US to solve the issue of Indians status before the end of the war. Due to this political pressure, Sir Stafford Cripp's a member of the war cabinet was sent to India to discuss the British Government Draft Declaration.

The Draft Declaration

- India Dominion status after the war.
- And also conceded for changes in the British Government of India Act 1935.

The Draft Declaration was unacceptable to the Congress Working Committee and was rejected in toto.

The failure of the Cripp's Mission further strained the relation between the Congress and the British Government.

In these circumstances Congress was forced to launch the struggle for complete freedom or absolute freedom.

It is highly relevant to mention the famous quotes of the Stalwart's of Indian freedom movement.

* Speech was laid on the Table.

Gandhiji – In the AICC meeting held in Mumbai supporting the resolution. Gandhiji addressed:-

"I am not going to be satisfied with anything but complete freedom. May be he (The Viceroy) will propose the abolition of salt tax, the drink evil. But I will say nothing less than freedom".

Further he came with a Mantra "Karo or Maro" (Do or Die). "We shall either free India or Die in the attempt. We shall not leave to see the perpetuation of slavery".

He even went to say. Stafford Cripp's proposal was "Naked Imperialism". The above said speeches by Gandhiji indicates his Social Radicalism and shift in the philosophy of the congress.

Though the need for non-violence was always reiterated Gandhi's Mantra of "Do or Die" represent the militant mood of Gandhi.

Pt. Jawaharlal Nehru on August 8 replying to the debate on Quit India Resolution in the AICC meeting in Mumbai stated: "We are in dead earnest. Let there be no mistake about it, we are on the verge of precipice and we are in dead earnest about it".

"We have entered the fire and we have now to come out of it successfully or be consumed by it".

Sardar Vallabhai Patel stated: "If there is a choice made between slavery and anarchy, I hope the people will chose anarchy, as the latter will ultimately disappear and the people will become free".

One of the most active revolutionaries of the Movement held the view that Quit India Movement was no less than the French Revolution and Russian Revolution. "It not only brought a complete transformation in the country but it gave birth to new India and gave new direction to its political life".

When the Resolution had came into action hundreds of people were killed, thousands were injured and more than one lakh were imprisoned. Following

which the Congress Organization was banned and almost all the leaders were arrested.

The Quit India Movement had a tremendous influence on the future of Indian Nationalism. Not the new Psuedo-Nationalism which we experience now a days.

The communist Party of India strongly opposed the Quit India Movement and supported the war effort because of the need to support the Soviet Union.

In response to which the British Government lifted the ban on Communist Party. According to the Communist the second world war was "the war of the Imperalist". Not a pie for it to be given for nobody to join it".

But when Hitler attacked Russia in June, 1941, the communist stand changed. they seized to brand it an Imperialist war and called it a people's war.

After which communist party switched loyalty to the British after the attack on the Soviet Union.

As a Member of RSP, I am proud to say that my Party though there was difference with the philosophy of Congress, actively participated in the Quit India struggle and sacrificed so many lives for the Nation. Jogesh Chandra Chatterjee, the founder Secretary of RSP organized and actively participated several movements in various parts of the country. The Veteran leader of RSP Com: Tridip Kumar Chaudhuri and others were arrested and put in prison particularly in the Quit India Movement.

Our forefathers sacrificed their lives for the betterment of the nation. This is the right time to discuss whether the dream of thousands of freedom fighters who have sacrificed their lives is fulfilled in the independent India.

Now a days, Indian Nationalism is deliberately molding in a different shape that as a Nationalism of a particular section of people and their belief.

Unity among diversity was the beauty of Indian struggle Hindus, Muslims, all religion all belief were united to achieve the common goal "freedom of India".

Unfortunately after 7 decades of independence, the political and social freedom of certain sections of people are in danger.

This is not the India that our freedom fighters had hoped for. So today, when we commemorate the Quit India struggle we the people of Independent India have to take a common pledge that the Unity, Integrity and Diversity of India will be protected by honouring and respecting all beliefs and faith beyond creed, caste and religion.

Thank you.

[*]**श्री भैरों प्रसाद मिश्र (बांदा) :** आज 9 अगस्त को सन् 1942 के अंग्रेजो भारत छोड़ो आंदोलन के 75 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित सदन में चर्चा के दौरान सर्वप्रथम में उन वीर शहीदों को नमन करता हूँ जिनके बलिदान के कारण आज हमें स्वतंत्रता मिली । साथ ही, मैं उन महापुरूषों को भी इस अवसर पर याद करता हूं जिनके प्रयासों से भारत आज विश्व की एक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है । स्वतंत्रता संग्राम में अगर बुन्देलखण्ड के योगदान की चर्चा न की जाए तो यह बेमानी होगा । हमारे बुन्देलखण्ड की वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने का कार्य किया और स्वतंत्रता आंदोलन में अपने प्राणों को आहूति दी । रानी दुर्गावती का बलिदान हम सबको प्रेरणा देता रहेगा । महाराज छत्रसाल के तलवार की धार से अंग्रेजों के पसीने छूटते थे। महाराणा प्रताप का बलिदान व भामाशाह का सब कुछ देश के लिए अर्पण करना हम सबको प्रेरणा देता रहेगा । हमारे प्रधानमंत्री जी ने जो आगामी पाँच वर्षों के लिए हम सबसे देश के लिए संकल्प लेकर कार्य करने का आह्वान किया है । हम हमारे लिए प्रेरणादायक है और मैं सदन से आग्रह करना चाहता हूँ कि हम सब मिलकर इस देश से भ्रष्टाचार, कुपोषण, आतंकवाद, बेरोजगारी, व जातिवाद व क्षेत्रवाद को मिटाने के लिए अपना पूरा शक्ति और समर्थन लगाने का कार्य करके भारत को सन् 2022 तक आबादी के 75 साल पूरे होने पर विश्व की एक महाशक्ति बनाएँ ।

---

[*] Speech was laid on the Table.

[*] SHRI JOSE K. MANI (KOTTAYAM): I, on behalf of my party Kerala Congress (M), hereby express our solidarity with my colleagues who spoke earlier on the solemn event of 'Quit India Movement' of 1942 marking the final onslaught on the Empire by Indian nationalists. We have many venerable citizens of those yester-years, now living in their sunset years, reminding us of the grit of the bygone generation making it to the altar of sacrifice fired by a sense of patriotism. Many of those who took part in the freedom struggle are no more with us, but their incarceration symbolising their fortitude makes us proud progenies of a valiant nation.

A few who are still with us and had participated in the historic 1942 Quit India Movement as young firebrands from student community were drawn to similar nationalistic ideologies like that of Netaji Subhash Chandra Bose who organised such movements from the alien soil. In retrospect, I feel it is this crucial movement that hastened the ultimate decision of the colonial powers immediately after cessation of the Great War to make India free from long years of its subjugation.

In concluding this tribute to those who made this historic event happen, I bow before their enduring sacrifice for the freedom of the nation that we all belong to as its grateful citizens.

Jai Hind!

[*] Speech was laid on the Table.

13.00 hours

SHRI P. KARUNAKARAN (KASARGOD): Thank you, Madam Speaker. I would like to participate in the discussion on the 75^{th} Anniversary of Quit India Movement in India.

There is no doubt that the slogan and message was raised by Father of the nation, Mahatma Gandhi. There were a large number of struggles such as Non-Cooperation Movement; *Dandi* March; Prohibition of foreign commodities and many other struggles. Besides, the political slogans, slogans on social changes such as untouchability and caste system had also come into force.

We got freedom not because of struggle of one day or one year, but it was due to the long glorious struggles that the nation had fought. The Indian National Congress has its own contribution. Mahatma Gandhi, the Father of the nation, has his great contribution in leading the struggle. At this point of time, we can remember the other Leaders such as Pandit Jawahar Lal Nehru, Shri Motilal Nehru, Sardar Vallabhbhai Patel, Maulana Abdul Kalam Azad, Netaji Subhash Chandra Bose, Dr. Ambedkar, Lala Lajpat Rai, Shri Bal Gangadhar Tilak and many other luminaries.

Many of the Left Party Leaders like Shri A. K. Gopalan, Shri E. M. S. Namboodiripad, Shri S. A. Dange, Shri Indrajit Gupta, Shri Ajay Ghosh and many other Left leaders were working with the Congress Party in the beginning. They have also participated in the struggle in the State and at the national level.

If we analyse with an independent view, then we could see a very inspiring aspect of the freedom struggle, which led different Parties and also the Leaders to the main objective, which is one and the same, that is, one that leads to the mainstream of freedom struggle.

The first Independence struggle was called `*Sipahi Lahala*' by the British in which thousands of soldiers participated and lost their lives.

Madam, the Meerut and the Kanpur conspiracy cases were framed and charged by the British. Many of the Left Party leaders were arrested and put

behind bars for a long time. It is interesting to note that Jawaharlal Nehru and Motilal Nehru who were the Secretary and President respectively of the Action Committee have defended the accused in these conspiracy cases.

I can proudly say that the present Left Party leaders were in jail years together just because they had participated in the freedom struggle of India. The first Opposition leader of this House, Shri A.K. Gopalan - for 15 years he was the Opposition Leader in this House – has spent years together in various jails in Kerala and outside. He was behind bars not once but many times. I am glad to say here that I am the son-in-law of Shri A.K. Gopalan. Many luminaries in the Treasury Benches and also in the Opposition were here.

Shri A.K. Gopalan was put in Trivandrum Pujapura Central Jail - Cell No.58. He was put behind bars for a long period of time. When India became Independent on 15th August, 1947, he was not released; he was still in jail and he was raising slogans alone in the jail itself. There was a very good understanding between Jawaharlal Nehru who was the Prime Minister at that time, and Shri A.K. Gopalan. We can see this in the biographies of Shri A.K. Gopalan and also Jawaharlal Nehru.

Our Party's General Secretary Shri Harkishan Singh Surjeet was a Rajya Sabha Member. In the 16th year of his life, he raised the National Flag, when he was surrounded by police, they tried to shoot him. On March 20, 1923 four young comrades - Appu, Kunhkambunair, Abbukkar and Chirukankar - who were all aged 19, were hanged merely because they were participating in the freedom struggle as Congress volunteers.

In Kerala, hundreds of innocent people were shot dead and burned in Punnapria and Vayalar by the then ruler Sir C.P. Ramaswamy, who was the very obedient ruler of the British Government.

Our freedom struggle is the struggle of the Indian people under the leadership of Mahatma Gandhi. Thousands of people were arrested and

put behind the bars. Students, peasants workers, lawyers, doctors, and a big stream of people from various walks of life were involved in this struggle. We could not forget the martyrs of Jalianwala Bagh, Bhagat Singh, Chandrashekhar Azad, Rajguru and many others. The first Independence struggle started in 1857 but it was called as *Sipahi Lahala* by the British.

I do not want to go into other details. After 75th years of Quit India Movement and 70 years of our Independence, this is the time to analyze our merits and defects, as hon. Chair has already pointed out. India has the largest population next to China. This is really a big resource that we have. We have an elected Parliament - both Lok Sabha and Rajya Sabha; we have 29 States; we have a judicial system - from the Supreme Court to the lower courts; we have the Reserve Bank of India to control the monetary system; we also have the President as the Head of the State. These are our administrative and organizational instruments that were set up to strengthen our democracy. This is the time for us to take strong steps as enumerated in the Preamble of our Constitution which points out to freedom of expression, freedom to organize, freedom to choose any food, freedom to speak any language and freedom to move anywhere. The question before us is whether we are able to follow these significant norms.

On the one hand we have achievements; on the other hand we have to critically self-assess our defects. The most important feature of the Quit India Movement was the absence of religious and communal division. We have six major religions, 122 major languages, 1599 other languages, 63 major festivals, 23 languages included in the Eighty Schedule, 3,000 castes and 25,000 sub-castes. This is the inspiring complexity of our Indian society.

We could achieve national unity in spite of having these very wide features. Here, we could see tolerance and mutual understanding with other religions, other castes and other languages. The national unity can be achieved through tolerance and mutual understanding with various societies. I am sorry to say that we are

losing such an atmosphere. The population of the minority is less. It comes to below 20 per cent. In recent times, the notification issued by the Government about cow protection and also the various incidents that we have witnessed in the name of cow vigilante, have created anxiety and apprehension among the *Dalits* and the minorities. But, I appreciate our Prime Minister who said that he would take very strong action. However, it is still continuing.

HON. SPEAKER: Please conclude.

SHRI P. KARUNAKARAN: I will take only two minutes.

We have to go further in the development of IT sector. There is a slogan of 'Digital India'. I fully agree with that. But, agriculture is the backbone of our country. But, the backbone is now broken. We see that thousands of farmers coming from Madhya Pradesh, Rajasthan, Maharashtra and from other places. It is not a political struggle. It is a struggle for survival. So, the Government has to think about it when we are celebrating this day.

It is true that there is a corruption. It is spreading on just like cancer. But, what action has the Government taken? The corruption issue should not be taken as a political issue. The Government should take it as a serious issue. The Government should not use this as a political tool, as a political objective to get the Governments disabled, or to get seats. The Government should not use the CBI or the Enforcement Directorate for this. If the Government is sincere, it should deal with this with an open mind. Thank you.

SHRI TATHAGATA SATPATHY (DHENKANAL): Madam, I would like to, first of all, thank you for creating this atmosphere today. As you told us in the BAC yesterday, you have personally taken interest to dedicate this day in the Indian Parliament for this kind of a serious discussion. I would thank parties from all sides of this House for having participated in this discussion and expressed their opinions without anybody disturbing each other.

All of us here, the representatives of this vast country of 130 crore to 150 crore of people have our own dreams. Maybe, some are small people and they have small dreams about the country. Some are having larger visions and they have larger dreams. But, all of us have dreams of what we see this country to be in the next 50 years or 100 years.

We all know and we all are aware that those who live for themselves are hated in this world or ignored at best. But, those and only those who live for others are fondly remembered all over the world, not only in one particular country, but all over. The history of India has been repeated, oft repeated and many learned speakers have given their opinions. So, I will have the audacity to say that I would not like to go back and would not like to take a leaf out of history. I would only like to speak a few words here about how do I feel, why do I feel disturbed in India today? Why do I feel worried? Where are we, all of us put together – no matter whether it is the Congress or the BJP or the BJD or the AIADMK or the Trinamool Congress? It does not matter. The political parties do not matter. We are, first of all, born as Indians. When we die, we will die as Indians.

We have to acknowledge that this is a multi-cultural society where people speak Tamil with as much love and as much respect as people speak Hindi, where people speak Oriya or Ahomia with as much gusto as the Marathi or the Gujarati. So, this is a country where tolerance is built into the very foundation of this nation. It is not something one has to shout from the rooftop and demand tolerance. Either it is there in you or the history of this country will reject you forever.

We cannot have walls in this country. We cannot say that because you wear this kind of clothes, you speak this kind of language, you eat this kind of vegetarian or non-vegetarian food, therefore, you are different from us. We cannot afford in the 21st Century to make this country into an us and them country. We simply cannot afford to give the teenagers of this nation a distorted image of what we as representatives of the people have dreamt of this country. It is sad to see that we in our petty desires and our petty ambitions, we have forgotten the interest of the country. I do not see aspiration anywhere. There is plenty of ambition. I differentiate greatly between the two.

When Gandhi ji said, "*Kare Ya Mare"*, we have twisted that. We have made it, *"Kare Ya Maarein"* and that is not fair to the coming generations of India. When he said, *"Ahimsa"*, he also said, "Civil Disobedience" because he knew the people of India could not rise up in arms. He knew that our nature was that we will be disobedient to the ruler, no matter who it is who is ruling us. Similarly, when he said, "Non-Cooperation", he knew our character that we like to be *Bhakts,* we like to be trolls and we like to bow down at the feet of the people who are in power just because we do not have the courage to stand up for what we think is true, what we think is correct or what is the honest India. We have seen the Paika Bidroha in Odisha, we have seen Shri Jayee Rajguru, we have seen Shri Surendra Sai and we have seen so many freedom fighters. But I would like to speak just this much, Madam, that it is time that we unite all our dreams, we do not divide and get into petty fights like who buys which MLA, who fights which seat, who wins what and which State Government comes to where. It is no more politics. It is the future of India. I hope that today, on this great day, when Madam Speaker has designed it in such a manner and led the way at the very outset to

make it a day of understanding and cooperation amongst all of us, when we go back home today, I hope we all will think where are we taking this India, what do we want to do with this India and how is the 14 year old, 18 year old or 20 year old young Indian girl or boy looking at us, are they inspired by looking at us or do they hate us? That is the question before us.

*[*] **कुँवर हरिवंश सिंह (प्रतापगढ़) :** भारत छोड़ो आंदोलन के 75वें वर्ष की चर्चा में अपने विचार रख रहा हूं। मेरा यह मानना है कि मेरे देश के जो लोग शहीद हुए उनका अपना कोई स्वार्थ नहीं था । वे लोग चाहते थे कि हमारे देश के लोगों को समान अधिकार मिले, समान विकास के अवसर प्राप्त हों, गरीबी और भुखमरी से सबको मुक्ति मिले। स्वतंत्रता सेनानी खुद विधायक, सांसद, मंत्री, मुख्यमंत्री या प्रधान मंत्री बनने की इच्छा नहीं रखते थे । आज आपने संसद में चर्चा सत्र का आयोजन किया इसके लिए आपका हार्दिक आभार। इसी बहाने हम आजादी के शहीदों की याद में मैं एक शेर पेश कर रहा हूँ।

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले,
वतन पर मरने वालों का यही अंतिम निशां होगा ।
जय हिंद

[*] Speech was laid on the Table.

SHRI H.D. DEVEGOWDA (HASSAN): Hon. Speaker, I express my sincere thanks to you for allowing me to speak. While you were allowing the Resolution to be discussed on the floor of this House, I was sincerely observing your speech sitting at the back side. The Leader of the House, the hon. Prime Minister; the Leader of the Congress Party, Shrimati Sonia Gandhi ji; and several other leaders spoke on the occasion of the anniversary of the Quit India Movement which took place on 9^{th} August, 1942. I was a student at that time and I was unable to participate in the Quit India Movement.

Let us be frank. Hon. Prime Minister expressed his views through his advertisement in the newspapers which stated: "*Sankalp se Siddhi*. Come, let us together pledge for building a New India by 2022." We are all going to extend our full support to this whether we would be here in 2022 or not. Today as a Member of this House I want to sincerely take the pledge towards a Clean India, Poverty-free India, Corruption-free India, Terrorism-free India, Communalism-free India, and Casteism-free India. On all these issues, I am prepared to extend my full cooperation. But let me say a few words.

I have entered public life in 1962. We take oath under the Constitution as Members of this House, as Members of State Legislatures, as Chief Minister or as Prime Minister. Let us introspect ourselves whether we are in conformity with the oath we have taken, whether we discharge our duty according to that oath or not. I do not know. I do not want to say where we have gone wrong. In this very House several issues were discussed. I do not want to elaborate on this issue. The point is, today forgetting all differences this House is going to take a pledge to remove all these problems.

We fought in the Quit India Movement to make this country free from the colonial rule or the British rule. We are ruling ourselves now. When we are ruling ourselves, let us introspect on how things are moving. I have got a written speech but I do not want to place it on the Table of the House.

The hon. Prime Minister has come. Let us be frank with ourselves and see in what direction we are going. Are we going in the direction of a Corruption-free India, Casteism-free India and Communalism-free India? What things are going on? Let us introspect ourselves. Madam, we can go on narrating many issues but I do not want to do that on a day when we are going to make a pledge here. We should all remember what things had happened, how many people had gone through sufferings, how many people were hanged during the British rule. Today people are suffering and committing suicides. For whose fault? For the failure of administration in the last seventy years after Independence? What all is going on? Is there any safety for woman? Madam, I do not want to say beyond one word about how our farmers are committing suicide. On that day they were hanged.

In the entire country, there was only one call by Pandit Jawaharlal Nehru when he proposed the Resolution and Vallabhbhai Patel seconded it. Many people and a galaxy of leaders in the country fought for freedom. But the only thing is, hon. Prime Minister, while you are giving this message, let your conscience move in the direction of removing all these things and achieving your goal. We are all going to stand by the views expressed by you, whether it is in your advertisement or in your speech. We are going to stand by you. The whole House will stand by you in making the Resolution which has been moved by your good self. Thank you very much.

* **श्री जय प्रकाश नारायण यादव (बाँका) :** मैं महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, लोहिया, बाबा साहेब अंबेडकर, जय प्रकाश नारायण, सरदार वल्लभ भाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद, अरूणा आसफ अली, डा. राजेन्द्र प्रसाद, सिद्धू-कान्हू, तिलका मांझी, पेरियार, तिलक जी को सलाम करता हूँ।

आज से 75 वर्ष पहले 9 अगस्त, 1942 को देश की आजादी का दूसरा पड़ाव माना जाता है। प्रथम 1875 ईसवीं का स्वतंत्रता संग्राम और द्वितीय 1942 ईसवीं का भारत छोड़ो आंदोलन। लम्बी अंग्रेजी हुकूमत के विरूद्ध कई ऐतिहासिक आंदोलन हुए। हमारे पूर्वजों ने बहुत प्रताड़नायें, यातनायें और कष्ट सहे। हजारों लोगों की कुर्बानियों के बाद ही हमें आज स्वतंत्र भारत में रहने का अवसर मिला। स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भारत छोड़ो आंदोलन या अगस्त क्रांति, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की अंतिम लड़ाई थी। इस आंदोलन के द्वारा ब्रिटिश हुकूमत की नींव को हिलाकर रख दिया गया था। महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में यह आंदोलन आजादी की अंतिम लड़ाई थी, जिसे अच्यूत पटवर्धन जी, अरूणा आशफ अली जी, राम मनोहर लोहिया जी, सुचेता कृपलानी जी, छोटू भाई पुराणिक जी, जयप्रकाश नारायण जी जैसे महान स्वतंत्रता सेनानियों की बागडोर इस आंदोलन को एक ढाँचागत स्वरूप प्रदान कर लाखों युवाओं को ब्रिटिश हुकूमत के विरूद्ध खड़ा कर दिया। महात्मा गांधी जी की यह तीसरी लड़ाई थी, जो क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद उन्होंने अंग्रेजों भारत छोड़ो का नारा दिया और पूरे देश में एक साथ 9 अगस्त को आंदोलन छेड़ दिया। यह दिन इसलिए भी चुना गया था कि हर वर्ष काकोरी-काण्ड की याद ताजा रखने के लिए युवाओं द्वारा काकोरी-काण्ड स्मृति-दिवस मनाने की परम्परा भगत सिंह जी ने प्रारम्भ कर दी थी और उस दिन बहुत बड़ी संख्या में नौजवान एकत्र होते थे।

अतः गांधी जी की एक रणनीति के तहत यह दिन चुना गया था। ब्रिटिश सरकार को करीब 6 हफ्ते लगे इस आंदोलन को दबाने में, लेकिन वैसे ही द्वितीय विश्व युद्ध में परेशान ब्रिटिश हुकूमत ने इस आंदोलन के आगे घुटने टेक दिए और उत्तर व मध्य बिहार के 80 प्रतिशत स्थानों पर जनता का राज हो गया। छात्रों, मजदूरों एवं किसानों ने मिलकर वैकल्पिक सरकार बनाई। वैसे ही 1939 के दूसरे विश्व युद्ध के कारण वस्तुओं के दामों में बेहताशा वृद्धि हुई थी। जिसके कारण जनता में काफी रोष व्याप्त था और महात्मा गाँधी जी के "करो या मरो" के नारे ने लोगों को एक नई ऊर्जा के साथ आंदोलन में कूद पड़ने की प्रेरणा दी। लाल बहादुर शास्त्री जी के नारे "मरो नहीं- मारो" ने आग में घी का काम किया और आंदोलन सही मायने में एक जन-आंदोलन बन गया। अन्ततः 15 अगस्त, 1947 को देश आजाद हुआ। हम सभी भारतवासी अपने पूर्वजों के ऋणी हैं।

---

* Speech was laid on the Table.

इसी क्रम में मैं एक विषय रखना चाहता हूँ। इसमें कई मुद्दों पर चर्चा में उठाया भी है कि गांधी जी का एक सपना था कि देश शराब से मुक्ति पाए। हमारे नेता माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी का इस ओर एक सार्थक प्रयास रहा और उन्होंने बिहार जैसे अति पिछड़े और बड़ी आबादी वाले राज्य को नशा-मुक्त बिहार बनाने का कार्य किया है। माननीय प्रधानमंत्री जी का गृह राज्य गुजरात भी शराब-मुक्त प्रदेश है। अतः सरकार क्यों नहीं शराब-मुक्त देश की घोषणा करती है। इस तरह हम देश को क्राईम-मुक्त बनाने की दिशा में आगे बढ़ेंगे क्योंकि शराब के कारण क्राईम में दिनोंदिन इजाफा हो रहा है। शराब-मुक्त देश होने से गरीबी से छुटकारा मिलेगा। हमारी माताओं, बहनों पर अत्याचार और जुल्म नहीं होगा। हमारे पूर्वजों के सपनों का देश तरक्की के मार्ग पर प्रशस्त होगा। बहुत-बहुत धन्यवाद।

*SHRI PREM SINGH CHANDUMAJRA (ANANDPUR SAHIB): On behalf of my Party S.A.D., I pay respect to all those who sacrificed their lives in Indian Freedom. Today we should go in history how our leaders and people got courage to say Quit India: There was a strange movement started 3 months before Gadar 1857 in Ambala Cantonment when three Sikh Regiment Army Persons, named Sohan ji, Mohan ji etc. were punished. Before Ram ji Namdhari started Non-cooperation, non movement Shaheed Bhagat Singh and Kartar Singh, Shaheed Udham Singh told countrymen how to die. Statue of Shaheed Udham Singh should be installed at Jallianwala Bagh at Amritsar. All Freedom Fighters who were put in prison of Andaman Nicobar, asked, Kala Pani should be included in Books and Light and Sound Programme. We should fulfil the dreams of freedom fighters and should be worried why farmers are committing suicide daily; why 33% of population have no shelters, clothes and meals to eat.

We should inquire why Indian Government took advice from British officers in 1984 Attack according to British Archrival's report. Is it not direct interference in our country's Affairs? Maharaja Dalip Singh's Assassin should be brought to India.

---

* Speech was laid on the Table.

[*]**डॉ. अरुण कुमार (जहानाबाद) :** आज 9 अगस्त, 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन पर अपने विचार रखता हूँ। मैं आशा करता हूं कि देश की नई पीढ़ी इस उत्सर्ग की गाथा को अपने दिल में संजोकर नए भारत के लिए निर्माण में संकल्प के साथ कर सके।

9 अगस्त, 1942 को करो या मरो की बुनियाद 1857 में ही पड़ गई थी। जब हम 1942 के आंदोलनकारियों को याद करते हैं तो 1857 के स्वतंत्रता सेनानियों में वीर कुंअर, तात्या टोपे, लक्ष्मी बाई, मंगल पांडेय जैसे लोगों को भी याद करना हमारा धर्म बनता है।

बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेष यानि सम्पूर्ण देश इस धारा में शामिल हुआ था। गांधी जी के नेतृत्व में निश्चित तौर पर भारत छोड़ो का संकल्प लिया गया, लेकिन भगत सिंह, अशफाकउल्ला, खुदीराम बोस, वीर सावरकर, लाल-बाल और पाल, सुभाष चन्द्र बोस, स्वामी सहजानंद सरस्वती, कोरमा मुंडा, तिलक मांझी आदि ऐसे क्रांतिकारियों ने देश के लिए अंग्रेजों के खिलाफ जो मोर्चा बनाया, उसे शब्दों में व्याख्यापित नहीं किया जा सकता।

आज जरूरत है कि 75 साल पहले के इस भारत छोड़ो आंदोलन के इस संकल्प के साथ हम नए भारत के निर्माण करें। इसका आधार शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, गरीबी दूर करना और राष्ट्रवाद को बनाना चाहिए।

माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने 2017 से 2022 के इन पांच वर्षों को संकल्प से सिद्धि तक की यात्रा बनाया है। यह एक ऐतिहासिक कदम है। हमें शब्दों में ही नहीं, बल्कि सवा सौ करोड़ भारतीयों को इस नए संकल्प को लेकर नए भारत का निर्माण करना है। भारत की आजादी को अक्षुण्ण रखने के लिए हमें सतत् जागरुक रहना पड़ेगा।

1974 आजाद हिन्दुस्तान में एक काल दिवस के रूप में चिन्हित हुआ है। लोक नायक जय प्रकाश जी के नेतृत्व में हजारों लोग इस आजादी की लड़ाई में कूदे थे। हजारों लोग शहीद हुए। हमें आजाद हिन्दुस्तान में लोकतंत्र एवं आजादी की मजबूती के लिए लड़ाई लड़नी पड़ी।

जार्ज फर्नांडिज जैसे मजदूर नेता कठिन कारावास में रखे गए। अटल बिहारी वाजपेयी जी से लेकर नरेन्द्र मोदी तक ने यातना का सामना किया। राजनारायण आदि नेता इस आंदोलन के जनक हुए। उन्होंने देश के कोने-कोने में आजादी की अलख जगाई और कोटे लेकर वोट तक में परास्त किया तथा लोगों के अधिकारों की रक्षा की।

[*] Speech was laid on the Table.

इस महान गाथा की चर्चा जो आपने सदन में करवाई, विभिन्न पार्टियों के माननीय सदस्यों ने इतिहास के पन्नों में झांका और यह नई पीढ़ी के लिए इतिहास का हिस्सा बनेगी। इसके साथ ही मैं अपनी बात समाप्त करते हुए आपके प्रति पुनः आभार व्यक्त करता हूं। नए भारत के निर्माण के लिए माननीय प्रधान मंत्री जी के संकल्प के लिए उनका आभार व्यक्त करता हूं।

*SHRI P.R. SUNDARAM (NAMAKKAL): 'Quit India Movement' was launched by Mahatma Gandhi ji to rescue the country from the Britishers on 8th August, 1942. This was the most popular and powerful mass movement in the series of agitations led by Gandhi in the course of freedom struggle.

During the first half of 'Quit India Movement', there were several strikes, demonstrations, processions etc. Later on, the next half of the movement included raids in government buildings, municipal houses, post offices, railway stations etc. and they were set on fire.

The last and the final phase began in September 1942 which started with mobs bombing government places like Bombay, Madhya Pradesh. Finally, the movement started gaining lots of importance through peaceful means and was carried on till Mahatma Gandhi wasn't released.

Gandhi ji had resolved that if the British did not listen to their demands, they would start a mass civil disobedience movement. Britain was involved in the War and with many political changes were going on in Britain, the demands of the congress were no met. This dissatisfaction was also one of the triggers for the movement.

Today after 75 years of Quit India Movement, we as proud Indians are in a position to safeguard the Independence which we got after the struggle and blood shed of various leaders who laid down their lives for the sake of this great Nation.

---

* Speech was laid on the Table.

*SHRI E.T. MOHAMMAD BASHEER (PONNANI): I would like to express my views on this historic Special discussion to commemorate 75th anniversary of Quit India.

This great freedom movement by Mahatma ji and his slogan "Do or Die" triggered crores and crores of Indians to March ahead in the freedom struggle.

At this stage we need not enter into a controversy about some parties opposed to the "Quit India Movement".

At the same time, we must pay our homage to those who sacrificed their life for the freedom movement.

We all know that the British ruthlessly behaved and let loose cruel harassment against the freedom fighters. Numerous freedom fighters were put in jail, mass fine was levied.

When we observe the 75th anniversary of the great freedom movement, let us renew our pledge to keep up our glorious tradition of India as the largest secular democratic country of the world.

The backbone of secular democracy is nothing but unity in diversity.

Let us dedicate ourselves to keep up the noble tradition of our nation. Let us remember the words and deeds of Mahatma ji and submit for the united India.

---

* Speech was laid on the Table.

*SHRI BALBHADRA MAJHI (NABARANGPUR): I would like to express my views on the contribution of forefathers of my Constituency during the freedom fight and sacrifice during the Quit India Movement, 1942.

On the call of the Father of the Nation Mahatma Gandhi, freedom fighters of Nabarangpur area marched towards Basugaon Police Station to place their memorandum for the Britishers quitting India on 24 August, 1942.

However, on their way, near Papadahandi, on the approach of Tura river, demonstrations were encountered by the Police and 19 people were gunned down, 24 people jumped into the full flowing river on 24th August, 1942. Thus, 33 innocent tribals lost their lives. The police Inspector responsible for this firing was Ram Krushra Naidu (Kalanga) of Jeypore.

Likewise, on 21st August, 1942, while people were holding peaceful demonstration in front of Matheli Police Station of Malkangiri sub-Division (now a full fledged District) of Koraput District about five people were gunned down by the Police. One of the persons killed was a forest guard.

As the forest guard was a Government employee, the police held responsible, Shri Laxman Naik of Tentuligoma, who was spearheading the demonstration Sh. Naik was falsely implicated, jailed and hanged for no fault of his on 29th March, 1943.

Ironically, the Advocate pleading for his life, Shri Jagannath Rao subsequently became an MP(LS) from Berhampur. The judge who sentenced Shri Naik, a tribal, to death subsequently became the Chief Secretary of independent Odisha State.

There have been many more contributions and sacrifices of tribals of the then Koraput District of Odisha towards freedom fight. But these two instances are worth mentioning.

One thing which is the saddest part of the happenings is that the rulers, tormentors all were also Indians only acting in the name of British Raj.

---

* Speech was laid on the Table.

*SHRI MEKAPATI RAJA MOHAN REDDY (NELLORE): Exactly 75 years back, the Father of the Nation, Mahatma Gandhi gave a call to the colonial Britishers to quit India and call to fellow Indians to Do or Die in achieving Independence to India. After exactly five years, India got Independence on 15 August, 1947.

Now, it is the duty of successive Governments to make every citizen of the country to think, behave and conduct himself or herself independently without fear.

Any nation, as a matter of fact, any citizen, cannot be politically independent without financial independence. As Hon. Prime Minister rightly said:-

"Sabka Saath, Sabka Vikas"

Everybody in the country must get financial independence to have political independence.

Let us resolve to make our democracy more strong and a role model to other countries in the world by correcting all the lapses in our democracy.

---

* Speech was laid on the Table.

*DR. MAMTAZ SANGHAMITA (BARDHMAN DURGAPUR): The 75th anniversary of Quit India movement, this call by Mahatma Gandhi on 8th August, 1942 is being observed today. This call is a step in for freedom fight and for independence. It was in many sense a resentment against economic and social exploitation by British. Various political parties and organizations have their own way, but Gandhiji's Indian National Congress tried to unite whole India with this movement. They started with Ahimsa and Satyagraha but most of leaders were arrested and tortured. Due to lack of proper guidance, in some places there were violation of laws, absence from Government works, boycotting and strikes in schools and colleges, factories. Though it was not totally successful but it created a pressure on British Raj to quit India. So some sankalp of unity "Karenge ya Marenge" was made all the Indian together. We ultimately achieved freedom. But at the cost of division that still creating various problem in our life and safety. After 70 years of independence, we are not economically sound. Peasants and farmers are facing some problems. We still have difference on the issue of caste, religion. We are denying/ignoring constitution in many ways. If we don't unite, outside force will enter India and may hamper our freedom.

The whole spirit of integration and multi-cultural, multi-religious image will be spoiled.

* Speech was laid on the Table.

* **श्री मल्लिकार्जुन खड़गे (गुलबर्गा)**: सबसे पहले मैं कांग्रेस पार्टी की ओर से भारत छोडो आंदोलन के जन्मदाता, राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल आदि जैसे महान नेताओं के साथ साथ उन सभी शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में अपने जीवन की आहुति दी। दूसरा महत्वपूर्ण phase था 1942 का 'Quit India movement, 'जो आखिरी और सबसे बड़ा जन आंदोलन था जिसने ब्रिटिश हुकुमत की जड़ें हिला दीं। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में शुरू हुआ यह आन्दोलन एक सोची समझी रणनीति का हिस्सा था, इसमें पूरा देश शामिल हुआ। कश्मीर से केरल और गुजरात से असम तक यह ऐसा आन्दोलन था जिसने अंग्रेजो को देश छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया।

गाँधी जी ने अंग्रेजों के खिलाफ देश में 5 बड़े अखिल भारतीय आंदोलन चलाए। 1919 और 1921 में Non-Cooperation Movement, 1930 और 1932 में Civil Disobedience Movement और 1942 में Quit India Movement. इन 5 में से, दो phase बहुत महत्वपूर्ण थे। पहला था जब Congress Working Committee ने 1930 में Lahore में 26 January को हर साल "पूर्ण स्वराज" दिवस के रूप में मनाने का ऐलान किया। आप सब को पता होगा इसी कारण हमारा संविधान भी 26 January 1950 को प्रभाव में आया। जबकि संविधान सभा ने हमारे संविधान को 26 November 1949 को पारित कर दिया था।

साल 1939 में पूरा विश्व दूसरे विश्व युद्ध की चपेट में था। अंग्रेजों ने भारत के प्रतिनिधियों से विचार विमर्श किये बिना भारत को इस विश्व युद्ध का हिस्सा बना दिया था। युद्ध के कारण तमाम चीज़ों के दाम बेहिसाब बढ़ गए थे और अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ भारतीय जनता का गुस्सा बढ़ने लगा था।

मार्च 1942 में क्रिप्स मिशन भारत आया, जिसमें युद्ध की समाप्ति के बाद भारत को Dominion Status देने की बात थी। प्रस्ताव में दिए गए आश्वासन देश के लिये ठीक नहीं थे। हमारे नेताओं को क्रिप्स मिशन के प्रस्तावों से धोखे का अहसास हो गया था। इन बातों से एक बड़े आंदोलन की जमीन तैयार होने लगी, और 8 अगस्त 1942 को बंबई के गोवालिया टैंक मैदान पर अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति ने एक प्रस्ताव पास किया जिसमें कहा गया किः

"देश ने साम्राज्यवादी सरकार के विरूद्ध अपनी इच्छा जाहिर कर दी हैं। अब उसे उस बिंदु से लौटने का बिल्कुल औचित्य नहीं है। अतः समिति अहिंसक ढंग से, व्यापक धरातल पर गाँधी जी के नेतृत्व में जनसंघर्ष शुरू करने का प्रस्ताव स्वीकार करती है।"

---

* Speech was laid on the Table.

कांग्रेस के इस ऐतिहासिक सम्मेलन में महात्मा गाँधी जी ने लगभग 70 मिनट तक भाषण दिया और कहा कि

"मैं आपको एक मंत्र देता हूँ, करो या मरो"

गाँधी जी के भाषण के बारे में Shri B. Pattabhi Sitaramayya ने लिखा कि

"वास्तव में गाँधी जी उस दिन अवतार और पैगम्बर की प्रेरक शक्ति से प्रेरित होकर भाषण दे रहे थे।"

गाँधी जी ने कहा जो लोग कुर्बानी देना नहीं चाहते, वे आज़ादी प्राप्त नहीं कर सकते। भारत छोड़ो आंदोलन का मूल भी इसी भावना से प्रेरित था-

"एक देश तब तक आज़ाद नहीं हो सकता, जब तक कि उसमें रहने वाले लोग एक-दूसरे पर भरोसा नहीं करते।"

9 अगस्त को पूरे देश में सुबह होने से पहले तक कांग्रेस कार्यसमिति के सभी सदस्य गिरफ्तार किये जा चुके थे। 9 अगस्त 1942 के दिन इस आंदोलन को लालबहादुर शास्त्री ने प्रचण्ड रूप दे दिया। 19 अगस्त, 1942 को शास्त्री जी भी गिरफ्तार हो गये।

महात्मा गाँधी की सबसे बड़ी सफलता यही थी कि उन्होंने आज़ादी की लड़ाई को पूरे भारतवर्ष में फैला दिया। गाँव के एक आम किसान पर भी उतना ही असर किया जितना दूसरे लोगों पर। इसका सबूत था कि इस आन्दोलन में ग्रामीण इलाकों की भागीदारी साठ प्रतिशत से ज्यादा थी। इस आंदोलन में बड़ी संख्या में युवाओं ने भाग लिया। सभी अपना काम छोड़ कर जेल जाने से लेकर जान देने को तैयार थे।

इसी वजह से इस आंदोलन ने अंग्रेजी हुकूमत की जड़े हिला कर रख दीं। सन् 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन अंग्रेजी राज के विरूद्ध भारतीयों का निर्णायक संग्राम साबित हुआ। इस आंदोलन के पाँच वर्ष के अन्दर ही हमें आज़ादी मिल गयी। यह आंदोलन भारत की आजादी की लड़ाई में सबसे गौरव का स्थान रखता है। सरकारी आंकड़ों की माने तो इस आंदोलन में 942 लोग मारे गए, 1630 घायल हुए, 18000 लोग नजरबंद किये गए और 60229 लोगों ने गिरफ्तारियाँ दी थीं।

भारत की आज़ादी की लड़ाई को आज के माहौल में देखना बहुत ज़रूरी है क्योंकि देश में जो हो रहा है वह शायद आज़ादी के लिये कुर्बानी देने वालों ने कभी नहीं सोचा होगा। आज देश में अराजकता, हिंसा का माहौल है, अल्पसंख्यकों, दलितों और महिलाओं के ऊपर हमले हो रहे हैं, उनको मारा जा रहा है। अगर आज गाँधी जी होते तो सोचते कि मैंने ऐसे भारत का स्वप्न नहीं देखा था।

गाँधी जी ने अपने 70 मिनट के भाषण मे लोकतंत्र और अहिंसा के लिये कहा था कि

"जिस लोकतंत्र का मैंने विचार कर रखा है उस लोकतंत्र का निर्माण अहिंसा से होगा, जहाँ हर किसी के पास समान आज़ादी और अधिकार होंगे। जहाँ हर कोई खुद का शिक्षक होगा। और इसी लोकतंत्र के निर्माण के लिये आज मैं आपको आमंत्रित करने आया हूँ। एक बार यदि आपने इस बात को समझ लिया तब आप हिन्दु और मुस्लमान के भेदभाव को भूल जाओगे। तब आप एक भारतीय बनकर खुद का विचार करोगे और आज़ादी के संघर्ष में साथ दोगे।"

डॉ अंबेडकर ने 25 नवंबर, 1949 को संविधान सभा में दिए अपने भाषण में इसकी आशंका जता दी थी इसीलिये उन्होंने कहा था संविधान के रहते हुए जो काम अराजकता की श्रेणी में आते हैं और इन्हें हम जितनी जल्दी छोड़ दें, हमारे लिए बेहतर होगा।

भारत छोड़ो आंदोलन की 75वीं वर्षगांठ को याद करते हुए अभी हाल ही में प्रधानमंत्री जी ने अपनी मन की बात में कहा कि

"We've to come together and resolve to let filth quit India, poverty quit India, corruption quit India, terrorism quit India, casteism quit India and communalism quit India"

लेकिन आज देश में उल्टा हो रहा है मोदी जी उस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। लेकिन हम यह कह सकते हैं कि आज देश के हाल हैं उससे तो यही लगता है कि मोदी जी चाहते हैं कि

"Constitution quit India, social justice quit India, equality quit India, liberty quit India and fraternity quit India"

शहीद की कुर्बानी बेकार ना जाये इसके लिये एक कवि ने कहा है कि-

हम लाये हैं तूफ़ान से कश्ती निकाल के
इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के

अंत में, इसी कवि ने गाँधी जी के लिये जो कहा, वह भी मैं सुनाकर अपनी बात षत्म करूंगाः

दे दी हमें आज़ादी बिना खड़ग बिना ढाल
साबरमती के संत तू ने कर दिया कमाल

*** श्री कपिल मोरेश्वर पाटील (भिवंडी):** आज 09 अगस्त 2017 को उस ऐतिहासिक दिवस की 75वीं वर्षगांठ है जब राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने वर्ष 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया था, महात्मा गाँधी के 'करो या मरो' के आह्वान ने राष्ट्रवादी भावनाओं की लहर और स्वतंत्रता हासिल करने की घोषणा के लिए प्रेरित किया। इस पवित्र अवसर पर हम उन सभी शहीदों को अपनी विनम्र और सादर श्रद्धाजंलि अर्पित करत हैं, जिन्होंने हमारी स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दी और अनगिनत कष्ट सहे, यह दिवस उन साहसी महिलाओं और पुरूषों द्वारा हमें दिए गए स्वतंत्रता के उपहार को संजो कर रखने और अपने देश की संप्रभुत्ता, अखंडता, एकता और विविधता को संभालकर रखने की हमारी प्रतिबद्धता को दोहराने को भी हमें स्मरण कराता है, यह हमें स्वतंत्रता सेनानियों के उद्‌गारों और कृत्यों के जरिये बदलते समय की चुनौतियों का एक होकर मुकाबला करने तथा समाज के सभी वर्गों के समावेशी आर्थिक विकास और वृद्धि को सुनिश्चित करने के लिए कार्य करने तथा एक पूर्ण विकसित भारत के चिर सिंचित सपने को पूरा करने की प्रेरणा भी देता है।

हमे याद रखना होगा कि स्वतंत्रता के लिए भारतवासियों ने बलिदान तो बहुत दिए, पर जिस प्रकार का राष्ट्रव्यापी आंदोलन अगस्त क्रांति नाम से सन् 1942 में हुआ। उसका उदाहरण विश्व में अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। गाँधी जी ने भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ किया। पर 8,9, अगस्त की मध्यरात्रि में ही गाँधी जी सहित देश के बहुत से नेता आंदोलन की दिशा देने वाले प्रमुख लोग अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए। उसके बाद जनता चल पड़ी कफन सिर पर बांध लिए, सिर हथेली पर रख लिए। डर-भय नाम की वस्तु ही भूल गए। पर यह नहीं जानते थे कि लक्ष्य कहाँ है, जाना कहाँ है बस एक ही स्वर था, अंग्रेजों भारत छोड़ो।

भारत छोड़ो आन्दोलन का स्मरण करने और करवाने का सीधा अर्थ यह है कि हमने असंख्य बलिदान देकर अंग्रेजों को तो भारत से भगाया। पर यह भूल गए कि हमारा आंदोलन हमारा लक्ष्य, विदेशी आक्रांताओं से भारत को मुक्त करके भारत और भारतीयता का गौरव बढ़ाना है।

अपनी भाषा है भली,
भलो अपना देश
जे कुल है अपना भलो,
यही राष्ट्र संदेश....

1. आज हमारी वर्तमान सरकार शुद्ध भारतीयता, संस्कृति को बढ़ावा देने में अग्रसर है, हमारे प्रधानमंत्री जी ने विदेश में अपने भाषण हिन्दी में बोलकर हिन्दुस्तान का मान बढ़ाया है,

* Speech was laid on the Table.

इसके लिए मैं सरकार को धन्यवाद देता हूँ, जो अंग्रेजियत भारत छोड़ो आंदोलन के बाद चल रही थी, विश्वविद्यालयों में चल रही थी। विश्वविद्यालयों में लॉ, डॉक्टरेट की डिग्री जो दीक्षांत समारोहों में काले गाउन पहन कर दी जाती थी। वह डिग्री अब शुद्ध भारतीय परिधानों में छात्र ले रहे हैं और इसमें वह अपने आप को **गौरवान्वित** महसूस करते हैं इससे भारत की पहचान बनती है।

भरा नहीं जो भावों से,
बहती जिसमें रसधार नहीं,
वह हृदय नहीं वह पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं....
धन्यवाद। जय हिन्द.... जय भारत....

***श्री अश्विनी कुमार चौबे (बक्सर):** भारत छोड़ो आंदोलन, द्वितीय विश्वयुद्ध के समय 8 अगस्त 1942 को आरम्भ किया गया था। यह एक आंदोलन था जिसका लक्ष्य भारत से ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करना था। भारत की आज़ादी से संबंधित इतिहास में दो पड़ाव सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण नज़र आते हैं- प्रथम '1857 ईसवी का स्वतंत्रता संग्राम' और द्वितीय '1942 ईसवी का भारत छोड़ो आंदोलन'। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम (1857) के दौरान विश्वविख्यात काकोरी काण्ड के ठीक सत्रह साल 9 अगस्त सन् 1942 को गाँधी जी के आह्वान पर समूचे देश में एक साथ आरम्भ हुआ। यह भारत को तुरन्त आज़ाद करने के लिए अंग्रेजी शासन के विरूद्ध एक सविनय अवज्ञा आंदोलन था।

'क्रिप्स मिशन' की असफलता के बाद महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ अपना तीसरा बड़ा आंदोलन छेड़ने का फैसला लिया। 8 अगस्त 1942 की शाम को बम्बई में गाँधी जी द्वारा **'अंग्रेजों भारत छोड़ो'** आंदोलन का नाम दिया गया था। हालांकि गाँधी जी को फ़ौरन गिरफ्तार कर लिया गया था लेकिन देश भर के युवा कार्यकर्ता हड़तालों और तोड़फोड़ की कार्रवाइयों के जरिए आंदोलन चलाते रहे। कांग्रेस में जयप्रकाश नारायण जैसे समाजवादी सदस्य भूमिगत प्रतिरोधी गतिविधियों में सबसे ज्यादा सक्रिय थे। गाँधी जी के साथ भारत कोकिला सरोजनी नायडू को यरवदा पुणे के आगा खान पैलेस में, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को पटना जेल व अन्य सभी सदस्यों को अहमदनगर के किले में नजरबंद किया गया था। सरकारी आँकड़ों के अनुसार इस जनान्दोलन में 940 लोग मारे गये, 1630 घायल हुए, 18000 डी.आई.आर. में नजरबंद हुए तथा 60229 गिरफ्तार हुए। आंदोलन को कुचलने के ये आँकड़े दिल्ली की सेंट्रल असेम्बली में ऑनरेबुल होम मेंबर ने पेश किये थे। पश्चिम मे सतारा और पूर्व में मेदिनीपुर जैसे कई जिलों में स्वतंत्र सरकार, प्रतिसरकार की स्थापना कर दी गई थी। अंग्रेजों ने आंदोलन के प्रति काफी सख्त रवैया अपनाया फिर भी इस विद्रोह को दबाने में सरकार को साल भर से ज्यादा समय लग गया।

दूसरे विश्व युद्ध में इंग्लैंड को बुरी तरह उलझता देख जैसे ही नेताजी ने आजाद हिन्द फौज को "दिल्ली चलो" का नारा दिया, गाँधी जी ने मौके की नजाकत को भाँपते हुए 8 अगस्त 1942 की रात में ही बम्बई से अंग्रेजों को "भारत छोड़ो" व भारतीयों को "करो या मरो" का आदेश जारी किया और सरकारी

* Speech was laid on the Table.

सुरक्षा में यरवदा पुणे स्थित आगा खान पैलेस में चले गये। "मरो नहीं, मारो" का नारा 9 अगस्त 1942 को लालबहादुर शास्त्री ने दिया जिसमें एक छोटे से व्यक्ति ने क्रान्ति की दावानल को पूरे देश में प्रचण्ड रूप दे दिया। 19 अगस्त, 1942 को शास्त्री जी गिरफ्तार हो गये।

भारत छोड़ो आंदोलन सही मायने में एक जनांदोलन था जिसमें लाखों आम हिंदुस्तानी शामिल थे। इस आंदोलन ने युवाओं को बड़ी संख्या में अपनी ओर आकर्षित किया। उन्होंने अपने कॉलेज छोड़कर जेल का रास्ता अपनाया।

अगर सच कहा जाए तो 1757 से अंग्रेजों के गुलाम बने भारत में सौ वर्षों बाद इस दास्ताँ से मुक्ति के लिए 1857 का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम ही सही मायनों में भारत की आजादी के इतिहास में नीव का पत्थर सिद्ध हुआ, जो 1857 के पुलिस विद्रोह के रूप में भी जाना जाता है। इसी पंक्ति में बलिया के मंगल पाण्डेय 1857 की क्रांति के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम बलिदानी तो हैं ही एवं इस प्रथम समबेद मुक्ति संग्राम के अग्रदूत भी हैं। वह पहले सिपाही थे जिन्होंने ब्रिटिश सेवा में होने के बावजूद किसी अंग्रेज अधिकारी पर गोली चलाने का साहस किया और मौत के घाट उतार दिया।

उसी काल खंड में भोजपुर के वीर कुंवर सिंह प्रथम सिपाही और महानायक थे, जिनके बारे में ब्रिटिश साहित्यकार होल्म्स ने लिखा है- "उस बूढ़े राजपूत ने ब्रिटिश सत्ता के विरूद्ध अद्‌भुत वीरता और आन बान के साथ लड़ाई लड़ी उस समय उनकी उम्र 80 थी। अगर वो जवान होते तो शायद अंग्रेजों को 1857 में ही भारत छोड़ना पड़ता।" इसी पंक्ति में झाँसी की रानी, तात्याँ टोपे आदि ने 'मर्दानगी' और बहादुरी के साथ अंग्रेजों से लड़ते हुए अपने प्राणों को न्योछावर किया।

गाँधी जी अपने आदर्श के रूप में बाल गंगाधर तिलक को मानते थे। तिलक ने सन् 1917 में कहा था कि "स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे"। तिलक का विश्वास था कि पुराने देवी-देवताओं और राष्ट्रीय नेताओं की वंदना से लोगों में सच्ची राष्ट्रीयता और देश प्रेम की भावना विकसित होगी।

जिस दौरान कांग्रेस के नेता जेल में थे उसी समय जिन्ना तथा मुस्लिम लीग के उनके साथी अपना प्रभाव क्षेत्र फैलाने में लगे थे। इन्हीं सालों में लीग को पंजाब और सिंध में अपनी पहचान बनाने का मौका मिला जहाँ अभी तक उसका कोई खास वजूद नहीं था।

जून 1944 में जब विश्व युद्ध समाप्ति की ओर था, तो गाँधी जी को रिहा कर दिया गया। जेल से निकलने के बाद उन्होंने कांग्रेस और लीग के बीच फासले को पाटने के लिए जिन्ना के साथ कई बार बात की। 1945 में ब्रिटेन में लेबर पार्टी की सरकार बनी। यह सरकार भारतीय स्वतंत्रता के पक्ष में थी। उसी

समय वायसराय लॉर्ड वावेल ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों के बीच कई बैठकों का आयोजन किया। फरवरी 1947 में वावेल की जगह लॉर्ड माउंटबेटन को वायसराय नियुक्त किया गया। उन्होंने वार्ताओं के एक अंतिम दौर का आह्वान किया। जब सुलह के लिए उनका यह प्रयास भी विफल हो गया तो उन्होंने ऐलान कर दिया कि ब्रिटिश भारत को स्वतंत्रता दे दी जाएगी लेकिन उसका विभाजन भी होगा। औपचारिक सत्ता हस्तांतरण के लिए 15 अगस्त का दिन नियत किया गया। उस दिन भारत के विभिन्न भागों में लोगों ने जमकर खुशियाँ मनायीं। दिल्ली में जब संविधान सभा के अध्यक्ष ने मोहनदास करमचंद गाँधी को राष्ट्रपिता की उपाधि देते हुए संविधान सभा की बैठक शुरू की तो बहुत देर तक करतल ध्वनि होती रही। असेम्बली के बाहर भीड़ महात्मा गाँधी की जय के नारे लगा रही थी।

15 अगस्त 1947 को राजधानी में हो रहे उत्सवों में महात्मा गाँधी नहीं थे। उस समय वे कलकत्ता में थे लेकिन उन्होंने वहाँ भी न तो किसी कार्यक्रम मे हिस्सा लिया, न ही कहीं झंडा फहराया। गाँधी जी उस दिन 24 घंटे के उपवास पर थे। उन्होंने इतने दिन तक जिस स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया था वह एक अकल्पनीय कीमत पर उन्हें मिली थी। उनका राष्ट्र विभाजित था हिंदू-मुसलमान एक-दूसरे की गर्दन पर सवार थे। उनके जीवनी लेखक डी.जी. तेंदुलकर ने लिखा है कि सितंबर और अक्तूबर के दौरान गाँधी जी पीड़ितों को सांत्वना देते हुए अस्पतालों और शरणार्थी शिविरों के चक्कर लगा रहे थे। उन्होंने सिखों, हिन्दुओं और मुसलमानों से आह्वान किया कि वे अतीत को भुला कर अपनी पीड़ा पर ध्यान देने की बजाय एक-दूसरे के प्रति भाईचारे का हाथ बढ़ाने तथा शांति से रहने का संकल्प लें।

गाँधी जी और नेहरू के आग्रह पर कांग्रेस ने अल्पसंख्यकों के अधिकारों पर एक प्रस्ताव पारित कर दिया। कांग्रेस ने दो राष्ट्र सिद्धांत को कभी स्वीकार नहीं किया था। जब उसे अपनी इच्छा के विरूद्ध बँटवारे पर मंजूरी देनी पड़ी तो भी उसका दृढ़ विश्वास था कि भारत बहुत सारे धर्मों और बहुत सारी नस्लों का देश है और उसे ऐसे ही बनाए रखा जाना चाहिए। पाकिस्तान में हालात जो रहें, भारत एक लोकतांत्रिक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र होगा जहाँ सभी नागरिकों को पूर्ण अधिकार प्राप्त होंगे तथा धर्म के आधार पर भेदभाव के बिना सभी को राज्य की ओर से संरक्षण का अधिकार होगा।

*SHRI BHARTRUHARI MAHTAB (CUTTACK): Today is an auspicious day. The day 75 years ago India rose to tear away from the shackles of bondage and gave a final call to a colonial powers to Quit India. That was a culmination of a long struggle of freedom for the people of India who had fought against the oppression of the East India Company and also of the British Crown during last 200 years of subjugation. It was a fight led by the Father of Nation on moral grounds purely on non-violent means. The evening of 8th August of 1942 witnessed meeting of the Congress Working Committee at Gowalia Tank Maidan of Mumbai which gave a final call to immediately end British Rule in India. The Resolution said " the continuation of that rule is degrading and enfeebling India and making her progressively less capable of defending herself, and of contributing to the cause of world freedom".

After 75 years when one looks back at the eventful evening of 8th August and the upsurge of the people on 9th morning and in later days, one feels proud to be descendants of those legendary freedom fighters of that day who gave away their present to make our future bright. Let us not forget history suffers distortions whenever the present is used to contextualise the past guided by ideological predisposition. We owe it to ourselves not to allow the nation's history to be circumscribed by ideological dogmas any longer. Prime Minister Narendra Modi is the initiator of today's event. It was his idea to devote a day to commemorate the 75th Anniversary of this August Kranti Divas. All respective political parties, leaders also agreed to observe this day and Madam Speaker has allowed to devote a full day for this purpose to commemorate the Tyag, Tapasaya of our freedom fighters for which country attained Independence in 1947. Those were the 5 years

* Speech was laid on the Table.

from 1942 to 1947 which shaped our destiny.

Communists were in support of the Quit India Movement initiately but they became supporters of the British regime after the then Soviet Union joined the Allied Forces and fouqht against Nazi Germany. This twist of allegiance occurred in India because of the events of Europe when Hitler attacked Russia. For the Communists, Freedom of India was not of greater importance. Important was to ally with the oppressive colonial British Empire to fight against fascist forces of Hitler.

I would like to mention here a very interesting aspect which is seldom discussed at a national level. The Congress Working Committee meeting at Wardha in the month of July, 1942 had not endorsed the view to give the final call to the Britishers to Quit India. Though in 1939 when the British Empire involved India in the World War the then Congress Government in different provinces had resigned expressing their differences against the decision of the Viceroy vis-a-vis the British Empire. The World War was thrust on India by the British. Provincial Governments in the country led by Congress had resigned in protest. Individual Satyagraha were held whereby large numbers of leaders were put behind bars in 1940. In 1942 at Wardha in July the Working Committee held its meeting and deliberated to decide the cause of action. Nehru and Maulana were not in favour of launching a country wide movement. They had valid reason. Japan was approaching Indo-China region and was in occupation of part of South East Asia.

There was tremendous fear that was amongst the people which was created by the British rule. During that period Mira Behn was send by Gandhiji to tour Odisha to instil a sense of confidence in them. During this period, British Viceroy wanted Congress to extend full co-operation to the

Empire to withstand the onslaught by the Japan forces if that evehtually occurs but Gandhiji was aghast to 'see through the treachery of the Britisher when he saw a Top Secret Government Note send by Military intelligence to Provincial Police to target the freedom fighters.

This had more relevance in Odisha because Netaji hailed from Odisha and large number of freedom fighters had personal relationship with Netaji. British Intelligence had presumed that Netaji may land on the cost of Odisha, where he would be welcomed in open arms.

It was between the Wardha Working Committee Meeting and August 8 Working Committee Meeting at Mumbai. A secret Office Order written from Central Military to the State Police was provided by Bhupendra Kumar Basu, the young man in his 30s, who was Prant Sar Sangh Challak of RSS in Odisha to Harekrushna Mahtab who was then the youngest Congress Working Committee Member. This letter was given to Gandhiji in Mumbai which exposed the duplicity and treachery of the British empire. The letter stated the police and their Intelligence to keep a close watch on the Congress leaders, freedom fighters, their movements, and the persons who are in their contact and secondly try to defame them through any means so that they lose acceptability. The instruction was to use all methods in their capacity to deride the leaders, freedom fighters and defame them so that they would not be in a position to lead. This was actually a treachery. On one side in the open they ask for support from the Congress leaders and behind the back they were indulging in this type of in villaneous activities. This letter was placed in the Working Committee at Gowalia Tank Maidan where Congress Working Committee had met. The small state called Odisha then, had provided the spark to the mighty movement which is aptly called August Kranti, Auqust Biplab. Gandhiji, Kasturba and Mahadev Desai were send to Agha

Khan Palace in Pune and the rest were incarcerated in Chand Bibi Quila, Ahmed Nagar Fort.

Kasturba breathed her last during this incarceration at Pune. Netaji, in his famous radio speech while addressing the country had propounded two words which reverberate even today. He had addressed Gandhiji as "Father of the Nation" and concluded his speech by saying "Jai Hind".

The Resolution of the Quit India Movement had "emphasised the demand for the withdrawal of the British power from India," had said a provisional Government would be formed its primary functions would be "to defend India and resist aggression with all the armed as well as the non-violent forces at its command, together with its allied powers, and to promote the well-being and progress of the workers in the fields and factories and elsewhere, to whom essentially all power and authority must belong." It also said the provisional Government will evolve a scheme for a constituent Assembly which will prepare a Constitution acceptable to all sections of people.

The commitment of the leadership through this resolution stated in very clear terms that "This Constitution ..... shall be a federal one with the largest measure of autonomy for the federating unit, and with residuary powers vesting in these units".

We attained independence in 1947 but the Nation was divided. Pakistan was formed on communal lines. India declared itself as a democratic republic through its Constitution which came into existence in 1950. Elections were held giving equal powers to every citizen of this country. I visit Ahmednagar Fort. Whenever I get a chance to visit Pune or nearby area. It was during my first visit in 1999-2000. I found that Quila had

turned into a military office. Stacks of files were put up in all the rooms. The rooms where Maulana Azad, Sardar Patel, Acharya Narendra Dev, my father Harekrushna Mahtab had stayed for more than 2 and a half years were all full of files, table, chairs. There was no trace of the historicity of 1942 to 1945 except their name written in very small letters over the door.

Only the double room, where Jawaharlal Nehru stayed was a memorial. Nothing about the others. No photographs nothing. I searched for the Visitor's Book and wrote down my comment. On my return to Delhi, I followed it up with a letter to the then Defence Minister George Fernandes. Thing have changed since then. I have visited Ahmednagar twice in between.

Army office has been shifted and it has been converted to a memorial. That was the place where top Leaders of 1942 were placed together from August 1942 to 1945. Progress of INA towards Indian Boarders had electrified the mind of the Indians. With the fall of Japan in 1945, the progress was halted no doubt but British became very much aware that the Indian Forces through which they had ruled for 200 years is no longer going to accept them. Netaji has demolished that.

Finally the uprising of Naval Force in 1946 in Mumbai, forced the hands of the British. Those were the five years of determination, perseverance and dedication of our forefathers, freedom fighters which forced the British to transfer power to Indian peacefully.

In Odisha, the first spark was on August 17th, when large number of Satyagrahis had burnt down a Police Station in Bhandaripokhari in Bhadrakh District.

Subsequently, agitations were held in Lunia where 7 were martyred. Four were martyred at Kaipada Kalamatia of Bari -Jajpur on August 26, 1942. Twenty people were wounded in police firing at Nimapada during agitation and on September, 28th at Iram where 29 satyagrahis were killed by British Police firing. The martyrs included one woman also.

The clarion call of Gandhiji, Engrez Bharat Chodo also reverberated in the Tribal dominated district of Koraput. They had not seen Gandhiji, nor heard him in person. There was no radio, they had only heard that their dear Bapu has asked to do or die.

At Mathili, the Satyagrahis all tribals were demonstrating peacefully which was attacked by British police. Some were killed and many were arrested. 24 people were killed in police firing in undivided Koraput district and around 100 were victims of police brutality in and outside prisons. Then, the British had repeated the Jallianwala Bagh massacre at Papadahandi on the bank of Turee river in Nabarangpur district where about 5000 followers of Mahatma Gandhi were victims of police action on August 24, 1942. As many as 19 people were killed and more than 30 others were wounded in the firing. Police brutality was also witnessed at Mathili of Malkangiri district on August 21, 1942 when five unarmed people were killed in firing. Approximately, 2500 people were sent to jails for raising their voice against the British rule. Laxman Naik was prosecuted and handed. While going to be hanged, he had uttered few words" Freedom will come. Bapu has said Bharat will be free. I will be born again in a Free India"

. Several people were tortured and over 30 were executed by the British Government in the Princely States like Dhenkanal, Nayagarh, Nilgiri and Talcher. Another heinous crime was committed against the tribals in 1939 during the World war when Britishers wanted to recruit tribals from

Sundergarh District to fight their war when the tribal people of Sundergarh resisted they were rounded up and shot dead. People say more than 400 tribal people succumbed to British bullets.

The Resolution of Quit India Movement which was a challenge to the British power in India was not of negativity. Rather it states that "it resolves to sanction for the vindication of India's inalienable right to freedom and independence, the starting of a mass struggle on non- violent lines on the widest possible scale, so that the country might utilise all the non-violent strength it has gathered during the last twenty-two years of peaceful struggle. Such a struggle must inevitably be under the leadership of Gandhiji and the Committee requests him to take the lead and guide the nation in the steps to be taken" .

It also gave a direction to the people that every man and woman who is participating in this movement must function for himself or herself. Every Indian who desires freedom and strives for it must be his own guide urging him on along the hard road where there is no resting place and which leads ultimately to the independence and deliverance of India. And it decided "when power comes the power will not be for Congress alone but it will belong to the whole people of India.". Such was the commitment which was enshrined in that resolution which became the Magna Carta of our Republic.

Today we are celebrating the 75th year of the Quit India Movement which demonstrated the unstoppable urge of the people of India for freedom. After five years India will be celebrating the 75 years of our Independence. The five years from 1942 to 1947 as I said earlier were the five years of Tapasya. The five years from 2017 to 2022 will be the year of our endeavour to drive out poverty, ignorance, communalism, terrorism, malnutrition from this country. It is time to

commit for development and resolve ourselves in a positive line to make our country great, prosperous where every citizen of this country would feel this country belongs to them.

माननीय अध्यक्ष : कुछ अन्य माननीय सदस्यों ने इस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने की अनुमति मांगी थी, आप सभी जानते हैं कि समय का अभाव है। मैं जानती हूं कि आप सभी के भाव इसमें साथ हैं, इसलिए मैं इन सभी के नाम बोलकर, इसमें सम्मिलित कर देती हूं। श्री तारिक अनवर, श्री प्रेम सिंह चन्दूमाजरा, श्री जय प्रकाश नारायण यादव, डा. अरुण कुमार, श्री उपेन्द्र कुशवाहा, श्री ई. टी. मोहम्मद बशीर, श्री कौशलेन्द्र कुमार, श्री सी.एन.जयदेवन, श्री प्रेम दास राई, श्री विजय कुमार हाँसदाक, कुंवर हरिवंश सिंह, श्री जोस के. मणि, श्री असादुद्दीन ओवैसी और श्री भगवंत मान जी, सभी छोटे-छोटे दलों के जितने भी लीडर्स हैं, मैंने आपको एलाऊ किया था कि आप अपने भाषण सभापटल पर ले कर सकते हैं, अगर किया हो तो भी स्वागत है, नहीं तो मैं आप सभी की भावनाओं को इसमें सम्मिलित करती हूं ।

अब मैं आपके सामने एक संकल्प पढ़ती हूं :

> "आज के दिन 75 वर्ष पूर्व सन् 1942 में, हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं सभी स्वतंत्रता सेनानियों ने सम्पूर्ण स्वराज्य की संकल्पना साकार करने के लिए अंग्रेजो भारत छोड़ो आन्दोलन का उद्घोष किया। 15 अगस्त, 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ। सन् 1942 से सन् 1947 के इन पांच सालों में, पिछले अनेकानेक वर्षों से चलने वाले स्वतंत्रता संग्राम का महान संकल्प सिद्ध हुआ। आज 9 अगस्त, 2017 को भारत छोड़ो आन्दोलन के 75वें साल में हम संकल्प लेते हैं कि सशक्त, समृद्ध, स्वच्छ तथा वैभवशाली भारत के निर्माण के लिए एवं भ्रष्टाचारमुक्त, सुशासनयुक्त, विज्ञान एवं तकनीक में उन्नत, सबके विकास के लिए संकल्पित, सद्भाव एवं राष्ट्र प्रेम से ओत-प्रोत, लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति दृढ़संकल्पित राष्ट्र की संकल्पना को फलीभूत करने के लिए हम सतत प्रतिबद्ध एवं समर्पित रहेंगे। 125 करोड़ देशवासियों के हम सभी जनप्रतिनिधि यह संकल्प करते हैं कि सभी देशवासियों को साथ लेकर, आज से पांच साल बाद आने वाले स्वतंत्रता के 75वें वर्ष में यानी सन् 2022 तक, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी तथा सभी स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों के भारत का निर्माण करने के लिए राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करेंगे।"

मुझे आशा है कि सभा इस संकल्प पर सहमत है।

अनेक माननीय सदस्य: जी, हां।

माननीय अध्यक्ष : एक प्रकार से हमने पूरे समाज के लिए अपने भाव उद्धृत किए, अब जैसा मैंने शुरू में कहा, दुख तो है ही, मगर कभी-कभी काम भी करना ही पड़ता है।

13.24 hours

OBITUARY REFERENCE

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, मुझे सभा को अपने साथी श्री सांवर लाल जाट के दुखद निधन की सूचना देनी है।

श्री सांवर लाल जाट राजस्थान के अजमेर संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने वाले वर्तमान सदस्य थे। वह नवम्बर, 2014 से जुलाई, 2016 तक जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय में राज्य मंत्री रहे। श्री सांवर लाल जाट 16वीं लोक सभा के दौरान जल संसाधन समिति और वित्त समिति के सदस्य रहे। इससे पूर्व वह राजस्थान विधान सभा के पांच बार सदस्य रहे। उन्होंने राजस्थान सरकार में कैबिनेट मंत्री और राज्य मंत्री के रूप में भी कार्य किया। श्री सांवरलाल जाट का 9 अगस्त 2017 को 62 वर्ष की आयु में दिल्ली में निधन हुआ। हम अपने साथी के निधन पर गहन शोक व्यक्त करते हैं और मुझे विश्वास है कि शोक-संतप्त परिवार को सांत्वना देने में सभा मेरा साथ देगी। अब सभा दिवंगत आत्मा के सम्मान में कुछ देर मौन खड़ी रहेगी।

13.25 hours

(The Members then stood in silence for a short while.)

HON. SPEAKER: The House stands adjourned to meet on Thursday, 10th August, 2017.

13.26 hours

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Thursday, August 10, 2017/Shravana 19, 1939 (Saka).